विश्व हिंदी समाचार

(विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक प्रकाशन)

www.vishwahindi.com

वर्ष: 6 अंक: 24 दिसंबर, 2013

हिन्दी के प्रथम ओपन सोर्स स्पेल चैक सॉफ्टवेयर 'माला शब्द संशोधक' तथा 'वर्धा हिंदी शब्दकोश' का लोकार्पण

हिंदी साहित्य जगत को वर्ष 2013 में दो नई उपलब्धियाँ हुईं 'माला शब्द संशोधक' तथा 'वर्धा हिंदी शब्दकोश' का प्रकाशन। 25 दिसम्बर 2013 को माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्रथम ओपन सोर्स स्पेल चेक सॉफ्टवेयर का लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम का आयोजन पं. मदनमोहन मालवीय की जयंती एवं पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी की जन्मतिथि के अवसर पर किया गया था। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के 16वें स्थापना दिवस समारोह के उपलक्ष्य में 29 दिसंबर 2013 को नजीर हाट परिसर के प्रांगण में 'वर्धा हिंदी शब्दकोश' का लोकार्पण समारोह संपन्न हुआ।

शेष पृ. 2

भानुमती नागदान : मॉरीशसीय हिंदी साहित्य का सबसे प्रबल महिला स्वर सदा के लिए मौन

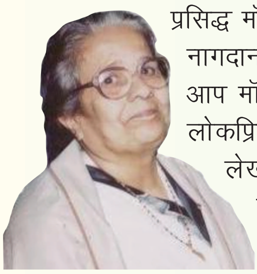

प्रसिद्ध मॉरीशसीय हिंदी साहित्यकार, सुश्री भानुमती नागदान का 18 नवंबर 2013 को देहान्त हो गया। आप मॉरिशस में हिंदी साहित्य के क्षेत्र में अत्यन्त लोकप्रिय व सम्मानित लेखिका रही हैं जिनकी लेखनी ने मॉरिशस के समाज, उसकी समस्याओं तथा विशेषकर इस देश की नारी के प्रति एक अत्यन्त आधुनिक दृष्टिकोण उजागर किया।

शेष पृ. 10

अंतरराष्ट्रीय हिंदी कविता प्रतियोगिता 2013: परिणाम

विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा विश्व हिंदी दिवस 2014 के उपलक्ष्य में एक अंतरराष्ट्रीय हिंदी कविता प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। परिणामों की घोषणा 10 जनवरी 2014 को विश्व हिंदी दिवस समारोह के अंतर्गत की गई। पाँच भौगोलिक क्षेत्रों के आधार पर प्रतियोगिता की पाँच श्रेणियाँ नियत की गई थीं। 5 भौगोलिक क्षेत्रों के परिणाम इस अंक में प्रस्तुत हैं।

शेष पृ. 12

'भाषा, साहित्य और प्रौद्योगिकी' अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी, कोल्हापुर
भारत - मॉरीशस हिंदी संगोष्ठी

शब्द सेतु संस्था के अध्यक्ष, डॉ. हरीश नवल, युवा चेतना साहित्य मंडल के अध्यक्ष डॉ. हरीश अरोड़ा, आधुनिक साहित्य के मुख्य संपादक, आशीष कंधवे तथा महात्मा गांधी संस्थान के भाषा संसाधन केंद्र, मॉरीशस के अध्यक्ष, विनय गुदारी के सहयोग से 15 अक्टूबर 2013 को हिंदी सिनेमा के सौ वर्ष तथा भाषा के विकास विषय पर आधारित एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन ले ग्राँ ब्लू हॉटल, मॉरीशस में संपन्न हुआ।

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के हिंदी विभाग, राष्ट्रीय इलेक्ट्रोनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान, भारत सरकार के संयुक्त तत्वावधान में 12 तथा 13 दिसंबर 2013 को द्विदिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी संपन्न हुई। संगोष्ठी की केंद्रीय संकल्पना 'भाषा, साहित्य और प्रौद्योगिकी' थी।

शेष पृ. 3–4

डॉ. सुनील कुमार लवटे की पुस्तक 'हिंदी वेबसाहित्य' का लोकार्पण

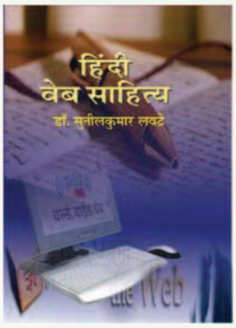

डॉ. सुनीलकुमार लवटे द्वारा रचित 'हिंदी वेबसाहित्य' विशेष है क्योंकि हिंदी भाषा और साहित्य के विभिन्न वेबसाइटों पर प्रकाशित साहित्य का यह पहला व्यवस्थित अनुसंधान है। इसके अलावा इसमें कंप्यूटर के उद्‌भव, वेबसाइटों के निर्माण और पोर्टल्स की बनावट आदि की बुनियादी जानकारी भी दी गई है। हिंदी के हर जानकार, चिन्तक, लेखक, पत्रकार और छात्र के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है।

शेष पृ. 5

आगे पढ़ें:

- मॉरीशस में अंतरराष्ट्रीय साहित्यिक सम्मेलन - आधारशिला पृ. 4
- ऑथर्स गिल्ड ऑफ इंडिया का 39 वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन सम्पन्न पृ. 7
- केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा हिंदीत्तर भाषी हिंदी नवलेखक शिविर पृ. 6
- महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में पुस्तक मेला पृ. 11
- दिव्या माथुर की 2 पुस्तकों "मेड इन इंडिया" और "हिंदी@स्वर्ग.इन" का लोकार्पण पृ. 8
- श्री काका कुँवरचन्दजी अजोधा, पंडित हरिदेव सहतू, श्री परमानंद श्रीवास्तव, श्री राजेन्द्र यादव व श्री के. पी. सक्सेना को श्रद्धांजलि पृ. 9-10-11

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय द्वारा 'वर्धा हिंदी शब्दकोश' का लोकार्पण

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के 16वें स्थापना दिवस समारोह के उपलक्ष्य में 29 दिसंबर 2013 को नजीर हाट परिसर के प्रांगण में 'वर्धा हिंदी शब्दकोश' का लोकार्पण समारोह संपन्न हुआ। इस अवसर पर आयोजित पुस्तक मेले में मंच पर विश्वविद्यालय के कुलपति विभूति नारायण राय, भारतीय ज्ञानपीठ के निदेशक तथा नया ज्ञानोदय के संपादक रवींद्र कालिया, 'वर्धा हिंदी शब्दकोश' के प्रधान संपादक प्रो. राम प्रकाश सक्सेना, प्रसिद्ध कथाकार से. रा. यात्री उपस्थित थे।

समारोह के दौरान वर्धा ज़िला के ज़िलाधिकारी श्री एन. नवीन सोना ने कहा कि ''मुझे इस बात का हर्ष हो रहा है और संभवत: मेरी जानकारी के अनुसार लगभग 300 भारतीय ज़िलों में वर्धा पहला ज़िला है और देश का यह पहला विश्वविद्यालय है जिसने कोश निर्माण करते हुए उस ज़िले की महत्ता को समझा और उसका नाम दिया वर्धा हिंदी शब्दकोश।''

चेन्नई निवासी और अहिंदी भाषी एन. नवीन सोना ने अपने वक्तव्य से उपस्थित मंचासीन तथा श्रोतागण को यह बोध कराया कि शब्दों की सुंदरता के अनुसार अर्थनिर्मित शब्दकोश हमारे लिए बहुत ही उपयोगी होते हैं। उन्होंने अपनी साहित्यिक अभिरुचि को उल्लेखनीय बताया कि फ्रेंच व जापानी भाषा सीखने के क्रम में मैंने शब्दों के टोन और ब्यूटी को समझा है। वर्धा आने से पूर्व मध्य प्रदेश में तीन साल की सेवा में मैंने हिंदी सीखी और अपने मित्रों के द्वारा हिंदी के भेजना व भिजवाना जैसे शब्दों के अर्थ आयाम को समझकर मुझे लगा कि शब्दों की सम्प्रेषणीयता का अर्थ संवाद-आधारित होता है। हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए वर्धा जैसी छोटी जगह पर होकर भी यह अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय नेशनल मैप में आ गया है। स्वतंत्रता के इतिहास में गांधी की गतिविधियों में वर्धा नेशनल मैप में आ गया था, ठीक उसी प्रकार हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा की गतिविधियों से पुन: वर्धा नेशनल मैप में छा गया है। यह मुझे यहाँ ज़िलाधिकारी रहते हुए अनुभव हुआ। अध्यक्षीय वक्तव्य में विश्वविद्यालय के कुलपति विभूति नारायण राय ने कहा कि 'वर्धा हिंदी शब्दकोश' अन्य हिंदी शब्दकोशों से बिल्कुल अलग है और इसके आनेवाले प्रत्येक संस्करणों में व्यवहार में आए हुए नए शब्दों को भी समाहित किया जाएगा, जैसे ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी अपने शब्दकोश में करती है। कुलपति राय की शब्दगरिमा, अर्थगांभिर्य और व्यवहार कुशलता से यह बात साफ़ झलकती है कि शब्दों की अर्थता के लिए कथाकार कुलपति कितने सचेत हैं। उन्होंने बताया कि 'वर्धा हिंदी शब्दकोश' का छोटा संस्करण शीघ्र ही आएगा ताकि शब्दप्रेमी शब्दकोश के सहयात्री भी बन सकें। कुलपति की यह परिकल्पना और भी प्रशंसनीय है कि उन्होंने शब्दकोश को निरंतर अद्यतन बनाने हेतु विश्वविद्यालय में शब्दकोश सचिवालय की संकल्पना की है।

महत्वपूर्ण बात यह भी है कि 'वर्धा हिंदी शब्दकोश' का प्रकाशन भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली ने किया है। ज्ञानपीठ के निदेशक रवीन्द्र कालिया ने कहा कि समय की व्यवहारिकता के अनुसार हिंदी की वर्तनियों में आंशिक परिवर्तन अनिवार्य है जिससे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी सहज हो जाती है। इस परिप्रेक्ष्य में यह 'वर्धा हिंदी शब्दकोश' प्रशंसनीय है, जिसे ज्ञानपीठ प्रकाशित करके गौरव का अनुभव भी करता है। प्रधान संपादक प्रो. राम प्रकाश सक्सेना ने कोश की सकारात्मक भूमिका बताते हुए अपने सहयोगियों को धन्यवाद दिया। लोकार्पण समारोह में से. रा. यात्री ने भी अपने विचार रखे। अतिथियों ने भी 'वर्धा हिंदी शब्दकोश' की सराहना की। समारोह का संचालन डॉ. रामानुज अस्थाना ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन राजेश यादव ने किया। इस समारोह में ममता कालिया, प्रो. निर्मला जैन, श्रीमती पद्मा राय, डॉ. शोभा पालीवाल, प्रो. सूरज पालीवाल, प्रो. सदानंद साही आदि की गरिमामय उपस्थिति रही साथ ही वि.वि. के शिक्षक प्रो. के. के. सिंह, डॉ. अनिल पांडे, डॉ. डी. एन. प्रसाद, डॉ. अनवर अहमद सिद्दीकी, डॉ. वीर पाल सिंह यादव, डॉ. प्रीती सागर, राजेश लेहकपुरे, अख्तर आलम, बी. एस. मिरगे सहित छात्र-छात्राएँ तथा वर्धावासी नागरिक बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

हिंदीप्रेमी ब्लॉगस्पॉट से साभार

http://hindipremi.blogspot.com/2013/12/blog-post30.html

हिन्दी के प्रथम ओपन सोर्स स्पेल चैक सॉफ्टवेयर 'माला शब्द संशोधक' का लोकार्पण

समारोह के मुख्य अतिथि व विशिष्ट अतिथियों द्वारा 'माला शब्द संशोधक' का लोकार्पण

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल में 25 दिसम्बर को हिन्दी के प्रथम ओपन सोर्स स्पेल चैक सॉफ्टवेयर 'माला शब्द संशोधक' (माखनलाल चतुर्वेदी हिन्दी शब्द शोधक) का लोकार्पण किया गया।

आज किसी भी भाषा के विकास में तकनीकी संसाधन महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। कंप्यूटर आधारित तकनीक भाषा के विकास में अहम होती जा रही है। इसलिए हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के शब्द संशोधक भाषा के विकास की अहम कड़ी होंगे। यह विचार वरिष्ठ पत्रकार राहुल देव ने माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में आयोजित हिन्दी के प्रथम ओपन सोर्स स्पेल चेक सॉफ्टवेयर के लोकार्पण समारोह में व्यक्त किए। इस पत्रकारिता के लिए ही नहीं बल्कि हिन्दी के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करेगा। इस अवसर पर सॉफ्टवेयर निर्माण दल के सदस्यों सर्वश्री अनुराग सीठा, रवि रतलामी, महेश परिमल एवं मनीष माहेश्वरी ने सॉफ्टवेयर सीडी का लोकार्पण करते हुए उसके अनुप्रयोग के बारे में प्रस्तुति दी। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के पूर्व सचिव उदय वर्मा ने कहा कि हिंदी कठिन किंतु वैज्ञानिक भाषा है। ऐसा माना जाता है कि विकसित एवं अविकसित भाषाओं में मुख्य अंतर यह है कि विकसित भाषा में कम अक्षर होते हैं। हिंदी में अधिक अक्षर होने के बावजूद भी इसका वर्तनी तैयार कर लेना एक बड़ी उपलब्धि है। साथ ही इसे ओपन सोर्स के तहत जारी करना हिंदी के विकास में एक बड़ा कदम है। अपने अध्यक्षीय संबोधन में कुलपति प्रो. बृज किशोर कुठियाला ने कहा कि हिंदी के विकास एवं विस्तार में अब तकनीकी संसाधन महत्वपूर्ण कड़ी बन रहे हैं इसलिए विश्वविद्यालय ने यह सॉफ्टवेयर तैयार किया है। विश्वविद्यालय की वेबसाइट www.mcu.ac.in पर यह सॉफ्टवेयर ओपनसोर्स के अंतर्गत उपलब्ध है। हिन्दी प्रेमी इसमें आवश्यक सुधार-परिवर्तन करते हुए इसके नए संस्करण तैयार कर हिन्दी के विकास में अपना योगदान दे सकते हैं। कार्यक्रम के दौरान डा. अनुराग सीठा ने इस संपूर्ण परियोजना की रूपरेखा रखी एवं इसके अनुप्रयोग के संबंध में बताया। कार्यक्रम का संचालन संजय द्विवेदी एवं आभार प्रदर्शन डा. चैतन्य परुषोत्तम अग्रवाल ने किया। इस अवसर पर हिन्दी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. मोहनलाल छीपा, वरिष्ठ पत्रकार सर्वश्री राजेंद्र शर्मा, गिरीश उपाध्याय, शिव अनुराग पटैरया, रामभुवन सिंह, कुशवाह, हरिमोहन शर्मा, बृजेश राजपूत, दीपक तिवारी, विजय दास, साहित्यकार श्री सुबोध श्रीवास्तव सहित विवि के शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी, छात्र-छात्राएँ उपस्थित थे।

डॉ. पवित्र श्रीवास्तव निदेशक, जनसंपर्क प्रकोष्ठ

मा.स.रा.प.सं.वि.वि., भोपाल

http://www.mcu.ac.in/ConfNMT.aspx

'भाषा, साहित्य और प्रौद्योगिकी': अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के हिंदी विभाग, राष्ट्रीय इलेक्ट्रोनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान, भारत सरकार के संयुक्त तत्वावधान में 12 तथा 13 दिसंबर 2013 को द्विदिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी संपन्न हुई। संगोष्ठी की केंद्रीय संकल्पना 'भाषा, साहित्य और प्रौद्योगिकी' थी।

इस अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी एवं संगणक (सॉफ्टवेयर साधित) प्रयोगशाला का उद्घाटन नीदरलैंड के यूरोपियन युनिवर्सिटी ऑफ़ ईस्ट वेस्ट के कुलपति प्रो. गौतम मोहन जी के करकमलों द्वारा संपन्न हुआ। प्रो. गौतम मोहन जी विगत पचास वर्षों से नीदरलैंड में हैं। आपने 'नीदरलैंड हिंदी समिति' के अध्यक्ष के रूप में हिंदी प्रचार-प्रसार का सराहनीय कार्य किया है तथा कर रहे हैं। आपने अपने उद्घाटकीय वक्तव्य में कहा, 'शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर का हिंदी विभाग नेटवर्क केंद्र बनेगा। 'भाषा, साहित्य और प्रौद्योगिकी' जैसे विषय को लेकर विचार विमर्श होना ज़रूरी है। हिंदी के विश्व स्तर पर होनेवाले स्थान तथा महत्व को परखकर उसका प्रचार-प्रसार, अध्ययन एवं अनुसंधान होना ज़रूरी है। भारत के बाहर रहनेवाले भारतीयों की पहचान हिंदी के कारण ही है। उन्हें हमें हमारे साथ जोड़ रखने में हिंदी और प्रौद्योगिकी बड़ी सहायक हो सकती है।'

उद्घाटन समारोह का अध्यक्ष पद विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. जे. पवार जी ने विभूषित किया। उद्घाटन समारोह में 'शोध' शीर्षक की शोधपत्रिका का प्रकाशन प्रो. गौतम मोहन जी के हाथों संपन्न हुआ। इसी पत्रिका का ऑनलाइन प्रकाशन विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. एन. जे. पवार जी ने संगणक की कुंजी दबाकर पर्दे पर प्रदर्शित किया। इस अवसर पर शिवाजी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अशोक भोइटे; प्रो. जी गोपीनाथन, पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी विश्वविद्यालय, वर्धा; डॉ. इरेश स्वामी, पूर्व कुलपति, सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर; प्रो. उपुल, केलिनिया विश्वविद्यालय, कोलंबो, श्रीलंका; श्री संजीव सूद, राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान, औरंगाबाद (भारत सरकार की स्वायत्त संस्था) के सिस्टम अनालिस्ट एवं डॉ. वसंत केशव मोरे, पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग मंच पर उपस्थित थे।

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी की संयोजक एवं हिंदी विभाग की अध्यक्षा प्रो. पद्मा पाटिल ने संगोष्ठी की प्रस्तावना में केंद्रीय संकल्पना को स्पष्ट किया। उन्होंने 'भाषा, साहित्य और प्रौद्योगिकी' का महत्व बताते हुए हिंदी के अभिकलनात्मक अध्ययन और अनुसंधान की विविध संभावनाओं, हिंदी के विविध सॉफ्टवेयर्स की जानकारी दी। विद्यार्थियों के लिए इस क्षेत्र की रोज़गार की संभावनाएँ बताईं और इससे जुड़कर रहने की उपयोगिता प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि मानव सभ्यता के विकास में विज्ञापन और प्रौद्योगिकी का बड़ा योगदान रहा है। यह विकास प्रक्रिया काफ़ी परिवर्तनशील रही है। यह परिवर्तन नवीन भावों, विचारों एवं संकल्पनाओं के आधार पर होता आया है। यह परिवर्तन और विकास का माध्यम 'भाषा' रहती है।

मानव जीवन के विविध क्रिया-कलाप 'भाषा' से जुड़े रहते हैं। इसे समृद्ध तथा व्यापक में विज्ञान और प्रौद्योगिकी का बड़ा सहयोग रहा है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के साथ भाषा का गहरा संबंध है। उसी तरह 'भाषा' के अध्ययन की एक समृद्ध परंपरा रही है। आधुनिक भारतीय भाषाएँ धीरे-धीरे अपने योगदान की ओर अग्रसर हो रही हैं। संगणक अंकीय गणना के साथ भाषिक विश्लेषण, संश्लेषण आदि कर सकता है, यह गणितज्ञ वीवर की संकल्पना व्यवहार में लायी जा रही है। यानि आज भाषा और संगणक के बीच के अवरोध दूर हुए हैं।

इस द्वितीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में भाषा तथा साहित्य का प्रौद्योगिकी के माध्यम से विचार विमर्श हुआ। विविध हिंदी सोफ्टवेयर्स, परिचालन प्रणालियाँ, वेब साहित्य, यूनिकोड, हिंदी ब्लॉग्ज़, हिंदी सर्च इंजन्स, ई-प्रस्तुति, साहित्यिक रचनाओं का सी. डी. रूप में चिह्नांकन, शब्द संसाधन, डाटा संसाधन, ओपन सोर्स आदि का प्रायोगिक ज्ञान एवं बहुभाषी संगणन तथा प्रकाशन कार्य (Multi Lingual Computing and publication) आदि पर चर्चा हुई। वर्तमान काल में भाषा तथा साहित्य के अध्ययन एवं अनुसंधान में प्रौद्योगिकी का महत्व निरूपित किया गया। प्रो. गौतम मोहन जी का 'करेबियन साहित्य' पर बीज भाषण संगोष्ठी का आकर्षण रहा। सूरीनाम, मॉरीशस, त्रिनिदाद एंड टोबेगो आदि करेबियन देशों के साहित्य, समाज शास्त्रीय विश्लेषण, राजनीतिक संदर्भ, मानवता आदि मुद्दों के साथ किया गया गतिशील व्याख्यान इस संगोष्ठी का प्राण ही रहा। साथ ही प्रो. जी. गोपीनाथन ने भाषा प्रौद्योगिकी जैसे विषय की महत्ता और उपयोगिता पर बीज भाषण दिया। इससे उपस्थित सभी को बहुत ही लाभ हुआ। प्रो. पद्मा पाटिल ने शोध ऑनलाइन पत्रिका पर लगभग एक घंटे का प्रदर्शन किया। इंटरनेट पर गूगल में जाकर shodhhindi.wordpress.com ऑनलाइन पत्रिका कैसे देखनी हैं आदि जानकारी दी। यह प्रस्तुति भी जिज्ञासा परिपूर्ति की रही।

हिंदी विभाग में विगत तीन-चार वर्षों से भाषा प्रौद्योगिकी विषय एम.ए. के अध्ययन में ही रखा गया। विभाग की अध्यक्षा प्रो. पद्मा पाटिल के अथक प्रयासों और विश्वविद्यालय के माननीय कुलगुरू महोदय की सहायता से विभाग में सॉफ्टवेयर साधित संगणक प्रयोगशाला विकसित की गयी है। इस अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में कवि निराला की 'कुकुरमुत्ता' कविता की प्रौद्योगिकीय प्रस्तुति विशेष रूप में सराही गयी। इसके निर्माण में प्रो. पद्मा पाटिल ने विभाग के छात्रों से अभिनय करवाने के लिए मार्गदर्शन किया। इसकी 20 मिनट की फ़िल्म बनाई जो संगोष्ठी में दिखाई गयी। इस संगोष्ठी में सभी भाषाओं, संगणक शास्त्र आदि विषयों के छात्र और प्राध्यापक सम्मिलित हुए थे। इस संगोष्ठी के समापन समारोह की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के प्र. कुलपति - डॉ. अशोक भोइटे जी ने निभाई। उन्होंने भी निर्धारित विषय की सराहना की। उस समय श्रीलंका के प्रो. उपुल, केरल के प्रो. गोपीनाथन, चंडीगढ़ की डॉ. योजना रावत, राष्ट्रीय इलेक्ट्रोनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान के श्री संजीव सूद, श्री श्रीराम भोगे, राजस्थान की डॉ. ममता खंडाल, असम की नन्दिता राजबंशी, महाराष्ट्र के विविध महाविद्यालयों के प्राध्यापक, भारत के अन्य प्रान्तों के अध्यापक एवं अनुसंधाता उपस्थित रहे। यह संगोष्ठी चर्चा-विमर्श, शोधनिबंधों की प्रस्तुति एवं प्रकाशन, ऑनलाइन प्रकाशन आदि सभी दृष्टियों से परिपूर्ति की रही।

प्रो. पद्मा पाटिल, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

भारत-मॉरीशस हिंदी संगोष्ठी

बाएँ से श्री राजनारायण गति, श्री अभिमन्यु अनत, श्री आशीष कंधवे

15 अक्टूबर 2013 को 'हिंदी सिनेमा के सौ वर्ष' तथा 'भाषा के विकास' विषय पर आधारित एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन ले ग्राँ ब्लू हॉटल, मॉरीशस में संपन्न हुआ। इस सम्मेलन का आयोजन भारत के शब्द सेतु संस्था के अध्यक्ष, डॉ. हरीश नवल, युवा चेतना साहित्य मंडल के अध्यक्ष डॉ. हरीश अरोड़ा, आधुनिक साहित्य के मुख्य संपादक, आशीष कंधवे तथा महात्मा गांधी संस्थान के भाषा संसाधन केंद्र, मॉरीशस के अध्यक्ष, विनय गुदारी के सहयोग से सफ़लतापूर्वक हुआ। मॉरिशस के नामी रचनाकारों, शिक्षकों के साथ-साथ भारत से लगभग 27 हिंदी प्रेमियों, शिक्षकों, पत्रकारों तथा रचनाकारों ने इस सम्मेलन में भाग लिया।

इस सम्मेलन का उद्घाटन मॉरीशस के कथा-सम्राट, अभिमन्यु अनत द्वारा हुआ। सम्मेलन में दो मूल सत्र रखे गए जिनमें उपस्थित रचनाकारों व शिक्षकों ने हिंदी सिनेमा के योगदान, कथ्य तथा हिंदी भाषा के विविध रूपों के साथ-साथ चुनौतियों पर भी अपना प्रपत्र पढ़ा।

भारत से आए मंडल के प्रतिनिधि, डॉ. हरीश नवल ने मॉरीशस के साहित्यकारों की प्रशंसा करते हुए कहा कि जिस निष्ठा के साथ यहाँ साहित्य-सृजन होता है, भारत को भी स्थानीय रचनाकारों से प्रेरणा लेनी चाहिए। हरीश अरोड़ा ने सम्मेलन के आयोजन के उद्देश्यों का उल्लेख करते हुए कहा कि भारत-मॉरीशस के संबंध को हिंदी साहित्य के माध्यम से तथा इस प्रकार के आयोजनों के ज़रिए और अधिक सुदृढ़ किया जा सकता है।

इस अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के संयोजक, विनय गुदारी ने अपनी प्रशंसा व्यक्त करते हुए प्रतिनिधि मंडल के सभी भारतीय सदस्यों को बधाइयाँ दीं और उनकी प्रेरणाओं से प्राप्त कई साहित्यिक दिशाओं की भी संतुष्टि प्रकट की।

सम्मेलन के दूसरे भाग में जहाँ भारतीय प्रतिनिधियों को सम्मानित किया गया वहाँ मॉरीशस के रचनाकारों तथा हिंदी सेवियों को भी सम्मान दिए गए। उनमें से अभिमन्यु अनत, रामदेव धुरन्धर, राज हीरामन, अजामिल माताबदल, डॉ. सरिता बुद्धू, धनराज शम्भु, डॉ. उदय नारायण गंगू, केसन बधु, विनय गुदारी आदि थे। हिंदी संगठन के अध्यक्ष, राजनारायण गति ने डॉ. हरीश नवल, डॉ. हरीश अरोड़ा तथा आशीष कंधवे का सम्मान किया।

इस सम्मेलन में विश्व हिंदी सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव, गुलशन सुखलाल के साथ-साथ हिंदी प्रचारिणी सभा, हिंदी स्पीकिंग यूनियन, आर्य सभा मॉरीशस, महात्मा गांधी संस्थान, डी.ए.वी. डिग्री कॉलिज, हिंदी लेखक संघ, हिंदी अकादमी, मॉरीशस ब्रोडकास्टिंग कार्पोरेशन के सदस्यों व प्रतिनिधियों ने सम्मेलन की गरिमा बढ़ाई।

सम्मेलन का समापन रात्रि के ग्यारह बजे एक काव्य गोष्ठी के साथ हुआ जिसमें भारतीय तथा मॉरीशसीय कवियों ने अपनी कविताओं से एक काव्यमयी वातावरण का प्रसार किया।

विनय गुदारी की रिपोर्ट

मॉरीशस में आधारशीलता की सफल यात्रा

कला व संस्कृति मंत्रालय (मॉरीशस) के अंतर्गत कार्यरत हिंदी स्पीकिंग यूनियन के साथ एक सहमति समझौता पत्र के तहत, आधारशीला से जुड़े अनन्य भारतीय साहित्यकार समय-समय पर यहाँ आते रहते हैं और विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन होता है।

इसी कड़ी में, पिछले वर्ष 10 अक्टूबर से 16 अक्टूबर तक आधारशीला के सदस्यों ने मॉरीशस की यात्रा की। हिंदी स्पीकिंग यूनियन के सहयोग से अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों में देश के प्रसिद्ध साहित्यकारों के साथ साक्षात्कार हुआ और हिंदी साहित्य को लेकर गंभीर चिंतन व विचारों का आदान-प्रदान हुआ। इन कार्यक्रमों में अन्य संस्थाओं का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा ।

आधारशीला का नेतृत्व भारत के प्रसिद्ध पत्रकार डॉ. दिवाकर भट्ट कर रहे थे जिनके साथ कई प्रसिद्ध लेखकों, पत्रकारों व साहित्यकारों ने यात्रा की, जैसे अमर उजाला के संपादक श्री प्रभात सिंह, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुल सचिव डॉ. कृष्ण चंद्र रल्हान, डॉ. सविता सिंह, प्रो. राजेश्वर आनदेव आदि ।

प्रतिनिधि मंडल के सदस्य मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम राजकेश्वर प्रयाग से भी मिले। राष्ट्रपति महोदय ने इनका स्वागत करते हुए हिंदी को प्रचारित करने के महान् अभियान के लिए बधाई दी। हिंदी स्पीकिंग यूनियन ने 10 अक्टूबर को प्रतिनिधि मंडल के लिए अभिनंदन समारोह का आयोजन किया जिसके विशेष अतिथि सामाजिक एकता मंत्री माननीय सुरेंद्र दयाल जी रहे ।

इसी प्रकार से महात्मा गांधी संस्थान, डी.ए.वी. डिग्री कॉलेज, हिंदी प्रचारिणी सभा इत्यादि के सहयोग से आधारशीला के अलग-अलग कार्यक्रम हुए। साथ ही प्रसिद्ध चित्रकार राम किशोर यादव के चित्रों की प्रदर्शनी महात्मा गांधी संस्थान की आर्ट गैलरी में लगाई गई। सभी लोगों ने यादव जी की चित्रकला की खूब प्रशंसा की ।

महात्मा गांधी संस्थान में ही आधारशीला प्रकाशन की पुस्तकों की प्रदर्शनी लगाई गई। अनेक विद्यालयों के शिक्षकों, छात्रों व हिंदी प्रेमियों ने इस प्रदर्शनी से अत्यंत लाभ उठाया। विभिन्न कार्यक्रमों के दौरान अनेक स्थानीय लेखकों तथा आधारशीला प्रतिनिधि मंडल में आए हुए साहित्यकारों व लेखकों ने अपने विचार व्यक्त किए। हिंदी को राष्ट्रसंघ की भाषा बनाने के संकल्प को लेकर गहन चिंतन व विचारों का आदान-प्रदान हुआ ।

डॉ. दिवाकर भट्ट ने आधारशीला प्रतिनिधि मंडल की सफल व सार्थक यात्रा पर संतोष व्यक्त किया। उन्होंने सभी संस्थाओं के प्रति हार्दिक आभार प्रकट किया। उनका मानना है कि हिंदी की विकास यात्रा मॉरीशस से होकर जाती है। आनेवाले दिनों में हिंदी स्पीकिंग यूनियन और आधारशीला के पारस्परिक सहयोग से अन्य कार्यक्रम आयोजित किए जाने की योजना है। हिंदी स्पीकिंग यूनियन डॉ. दिवाकर भट्ट एवं उनके सहयोगियों को इस सद्भावना यात्रा के लिए हार्दिक धन्यवाद समर्पित करता है ।

श्री राजनारायण गति की रिपोर्ट

भारत-मॉरीशस संगोष्ठी के लिए भारत से आए शैक्षणिक, साहित्यकार, प्रोफ़ेसर, प्राध्यापक व अतिथियों ने 19 अक्टूबर 2013 को विश्व हिंदी सचिवालय के दर्शन भी किए। इस अवसर पर सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव श्री गुलशन सुखलाल ने आगन्तुकों का हार्दिक स्वागत किया तथा सचिवालय के उद्देश्य, कार्यों व गतिविधियों के बारे में एक पृष्ठभूमि बांधी। अतिथियों ने भी अपने व्यक्तिगत तथा संस्थागत अनुभव बाँटे जिससे कि यह यात्रा अत्यन्त ज्ञानवर्धक रही।

हिंदी प्रचारिणी सभा: समावर्तन समारोह 2013

महामहिम राजकेश्वर प्रयाग, मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति

7 दिसंबर 2013 को हिंदी भवन, मॉरीशस के सुरुज प्रसाद मंगर भगत सभागार में इस वर्ष का समावर्तन समारोह भव्य रूप से मनाया गया। उत्सव के मुख्य अतिथि मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम राजकेश्वर प्रयाग जी थे। उनके आगमन से ही उत्सव का आरम्भ राष्ट्रगान से हुआ। इस अवसर पर भारतीय उच्चायोग के द्वितीय सचिव श्री मीमांसक, पी. पी. एस. श्रीमती कल्याणी जगू, पाँम्प्लेमूस ग्राम परिषद के अध्यक्ष श्री उचित, विश्व हिंदी सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव श्री गुलशन सुखलाल तथा भोजपुरी संगठन की अध्यक्षा श्रीमती सरिता बुद्धू की उपस्थिति ने उत्सव की शोभा बढ़ाई। सभा के प्रधान श्री यन्तुदेव बुधु का स्वागत भाषण हुआ। प्रधान जी ने सभा का संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत करते हुए सभा के कार्यों का उल्लेख किया तथा सभा के दाताओं के प्रति आभार प्रकट किया जिन्होंने हिंदी भाषा के प्रचार के लिए अपनी सम्पत्ति दान में दी।

पंकज पत्रिका का लोकार्पण:
बाएँ से श्री अजामिल माताबदल,
महामहिम राजकेश्वर प्रयाग, मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति व श्री यन्तुदेव बुधु

इस अवसर पर दो महानुभावों को 'हिंदी प्रचारिणी सभा सम्मान' से विभूषित किया गया। वे हैं – श्री निरंजन बिगन तथा श्रीमती लीलामणि चुरामन।

गणराज्य के राष्ट्रपति द्वारा सभा के वेबसाइट का लोकार्पण हुआ तथा भवन में एक कंप्यूटर कक्ष का भी उद्घाटन हुआ। इस वर्ष की छठी कक्षा तथा प्रवेशिका परीक्षा में प्राप्त दस प्रथम छात्रों को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। समावर्तन समारोह के अवसर पर महामहिम राष्ट्रपति के हाथों सभा द्वारा प्रकाशित 'पंकज' पत्रिका के नए अंक का लोकार्पण भी हुआ। पत्रिका के बीस वर्ष हो रहे हैं। पत्रिका के संपादक श्री अजामिल माताबदल हैं। यह एक त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका है। यह पत्रिका देश की बैठकाओं तथा कॉलेजों के छात्रों तक पहुँचती है।

गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम श्री प्रयाग सभा के कार्यों से बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने सभा-भवन के सामने स्थित सभा के मुख्य दाता श्री रामदास रामलखन की प्रतिमा को एक पुष्पमाला अर्पित की।

हिंदी प्रचारिणी सभा के सूचना-पत्र से साभार

डॉ. सुनीलकुमार लवटे की पुस्तक "हिंदी वेब साहित्य"

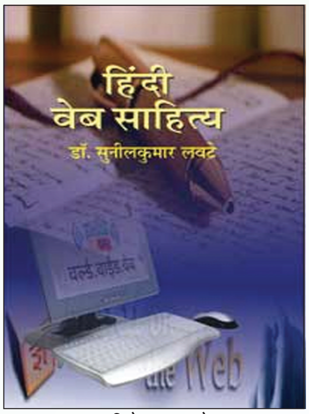

डॉ. सुनीलकुमार लवटे द्वारा रचित यह पुस्तक इसलिए विशेष है क्योंकि हिंदी भाषा और साहित्य के विभिन्न वेबसाइटों पर प्रकाशित साहित्य का यह पहला व्यवस्थित अनुसंधान है। इसके अलावा इसमें कंप्यूटर के उद्भव, वेबसाइटों के निर्माण और पोर्टल्स की बनावट आदि की बुनियादी जानकारी भी दी गई है। हिंदी के हर जानकार, चिन्तक, लेखक, पत्रकार और छात्र के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है।

सीधे इंटरनेट पर प्रकाशित हिंदी साहित्य का व्यापक परिचय देनेवाली यह पुस्तक ज्ञानभाषा के रूप में हिंदी की क्षमता को भी रेखांकित करती है और इंटरनेट जैसे सर्वव्यापी मंच पर हिंदी के नए उभरते भाषा-वैज्ञानिक स्वरूप को भी स्पष्ट करती है।

यह पुस्तक उन साहित्यकारों, समीक्षकों, अध्यापकों और रचनाकारों के लिए भी 'आई ओपनर' का काम करेगी जो अभी तक इंटरनेट से बचते आए हैं और उसकी क्षमता तथा उपयोगिता को नज़रअंदाज़ करते रहे हैं। हिंदी के प्रति उपयोजित प्रतिबद्धता (applied commitment) की भूमिका के प्रति आगाह कर यह पुस्तक हमें संगणकीय प्रयोग के लिए प्रोत्साहन भी देती है।

डॉ. सुनीलकुमार लवटे द्वारा रचित इस पुस्तक में विस्तारपूर्वक संगणक की परिभाषा एवं स्वरूप, उद्भव और विकास, आधुनिक संगणक, आधुनिक संगणकों का विकास, संगणकों का पीढ़ीगत विकास, इक्कीसवीं सदी के संगणक, इंटरनेट का उद्भव और विकास, वर्ल्ड वाइड वेब का उद्भव और विकास, भारतवर्ष में इंटरनेट का आगमन और विस्तार, हिंदी वेबसाइट का उद्भव और विकास, हिंदी भाषा और साहित्य के वेबसाइटों से लाभ, हिंदी भाषा और लिपि के वेबसाइट पर प्रकाशित संसाधन, वेबसाइटों पर प्रकाशित हिंदी साहित्य, वेबसाइटों पर प्रकाशित हिंदी भाषा और साहित्य, हिंदी भाषा और साहित्य विकास में वेब साहित्य का योगदान, हिंदी भाषा और साहित्य का वेबपूर्ण रूप, हिंदी भाषा और साहित्य में वेब आविर्भाव से स्थित्यंतर, इक्कीसवीं सदी का वेब साहित्य, भारतीय भाषाओं का वेब साहित्य, हिंदी वेब साहित्य का स्तर आदि विषयों को उजागर किया गया है।

राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित इस पुस्तक पर पूरी जानकारी http://www.rajkamalprakashan.com/index.php?p=sr&Uc=9788126724536 पर उपलब्ध है।

राजकमल प्रकाशन फ़ेसबुक पृष्ठ तथा 'हिंदी वेब-साहित्य' पुस्तक से साभार

यार्क में साहित्यिक गतिविधियाँ

4 दिसम्बर 2013 को भारतीय भाषा संगम, यार्क के तत्वावधान में 'सुनिए-सुनाइए' की आठवीं बैठक में आए साहित्यकारों का उषा वर्मा ने अपने आवास पर स्वागत किया। अध्यक्षता करते हुए महेंद्र वर्मा ने सब को याद दिलाया कि इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है युवकों एवं नए रचनाकारों को प्रेरित करना। गोष्ठी में युवकों में सत्यम वर्मा, आदित्य वशिष्ठ, प्रिशा वशिष्ठ, ओजस पांडेय ने कविता पाठ किया। इनके अतिरिक्त वैशाली पन्त जोशी, गौरव जोशी, सावित्री पांडेय, उषा वर्मा, सूबेदार पांडेय, पुलक सहाय, नीलकमल, रामाश्रय सिंह, द्रोण शर्मा और महेन्द्र वर्मा ने भी काव्य पाठ में हिस्सा लिया। गीता सहाय ने गीत गाया। धर्मेन्द्र एवं गुर्दीप ने स्काइप के माध्यम से शिरकत की। कार्यक्रम भोजन के साथ समाप्त हुआ।

महेन्द्र वर्मा की रिपोर्ट

नवगीत परिसंवाद-2013 का सफल आयोजन

मुख्य अतिथि तथा विशिष्ट अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन

लखनऊ में नवगीत को केन्द्र में रखकर दो दिवसीय कार्यक्रम 23 तथा 24 नवम्बर 2013 को गोमती नगर के कालिन्दी विला में स्थित अभिव्यक्ति विश्वम के सभाकक्ष में सम्पन्न हुआ। नवगीत की पाठशाला के नाम से वेब पर नवगीत का अनोखे ढंग से प्रचार-प्रसार करने में प्रतिबद्ध अभिव्यक्ति विश्वम द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम की कई विशेषताएँ हैं जो इसे अन्य साहित्यिक कार्यक्रमों से अलग करती हैं।

विघ्नविनाशक गणेश के समक्ष मंगलदीप जलाकर कलादीर्घा पत्रिका के सम्पादक एवं चित्रकार अवधेश मिश्र जी ने पोस्टर प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। पूर्णिमा वर्मन, विजेन्द्र विज, अमित कल्ला और रोहित रूसिया के द्वारा बनाये गये नवगीत पोस्टरों को दर्शकों के लिए विशेष रूप से लगाया था जिसे भरपूर सराहा गया। इस अवसर पर कार्यक्रम की संयोजक पूर्णिमा वर्मन ने विगत दो वर्ष से आयोजित किये जा रहे नवगीत परिसंवाद की संक्षिप्त रूपरेखा तथा नवगीत के लिए अभिव्यक्ति विश्वम की विषयक भावी योजनाओं के विषय में जानकारी दी।

श्री वल्ली सिंह चीमा

श्री निर्मल शुक्ल

डॉ. भारतेन्दु मिश्र

श्री धनंजय सिंह

श्री नचिकेता

दो दिवसीय कार्यक्रम के अंतर्गत प्रत्येक दिन तीन सत्र चले। प्रथम सत्र कार्यशाला का था जिसमें डॉ. भारतेन्दु मिश्र (दिल्ली) का वक्तव्य हुआ। उन्होंने गीत और नवगीत में अंतर स्पष्ट करते हुए कहा-'गीत वैयक्तिकता पर आधारित होता है , जबकि नवगीत समष्टिपरकता से जुड़ा होता है।'

दूसरे सत्र में वरिष्ठ नवगीतकारों द्वारा नवगीत प्रस्तुत किये गये। इस अवसर पर हौसलों के पंख (कल्पना रमानी), समकालीन छंद प्रसंग (डॉ. भारतेन्दु मिश्र), लकीरों के आर-पार (गीता पंड़ित), नवगीत 2013 (संपादक - डॉ. जगदीश व्योम एवं पूर्णिमा वर्मन), बुद्धिनाथ मिश्र की रचनाधर्मिता (सम्पादक: अवनीश सिंह चौहान) पुस्तकों का लोकार्पण किया गया।

तीसरे सत्र में नई पीढ़ी के रचनाकारों का कविता पाठ रखा गया था। इसमें ओमप्रकाश तिवारी (मुंबई), ने अपने नवगीत प्रस्तुत किये।

दूसरे दिन नवगीत के अकादमिक सत्र में छह शोधपत्र पढ़े गए। पाँचवें सत्र में महिला नवगीतकारों ने काव्यपाठ किया । छठे सत्र में स्थानीय एवं अन्य रचनाकारों का कवितापाठ हुआ।

शाम को आयोजित सांस्कृतिक संध्या में विजेन्द्र विज, शंभु कुमार झा एवं मनु गौतम द्वारा नवगीतों पर निर्मित नवगीत-फिल्मों को दिखाया गया जिसे भरपूर सराहना मिली। ये फिल्में कुमार रवीन्द्र, नचिकेता, कृष्णानंद कृष्ण, मनु गौतम और पूर्णिमा वर्मन के नव गीतों पर आधारित थीं।

नाट्य प्रस्तुति में अनेक रचनाकारों के नवगीतों पर आधारित, पूर्णिमा वर्मन द्वारा रचित नुक्कड़ नाटक 'आटा गीला' नितिन जैन के निर्देशन एवं रामशंकर वर्मा द्वारा सह निर्देशन में प्रस्तुत किया गया।

संगीत के कार्यक्रम में नवगीतों की संगीतमय प्रस्तुति सम्राट एवं राजकुमार और उनके साथियों ने की, जबकि संयोजन रश्मि एवं आशीष का रहा। कार्यक्रम का संचालन रोहित रूसिया ने किया। विजेन्द्र विज एवं श्रीकान्त मिश्र ने मल्टीमीडिया विशेषज्ञ की भूमिका का निर्वहन किया। विशेष सहयोग श्री प्रवीण सक्सेना और आदित्यकुमार वर्मन का रहा। आभार अभिव्यक्ति पूर्णिमा वर्मन ने की।

शशि पुरवार की रिपोर्ट

केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा हिंदीत्तर भाषी हिंदी नवलेखक शिविर

बाएँ से श्रीमती कुलदीप कौर, श्री अनिरुद्ध सिंह सेंगर तथा श्री राजेन्द्र परदेशी

10 से 17 अक्टूबर 2013 को गांधीनगर में केन्द्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा हिंदीत्तर भाषी हिंदी नवलेखक शिविर का आयोजन सम्पन्न हुआ।

10 अक्टूबर 2013 को गांधीनगर (गुजरात), केन्द्रीय हिंदी निदेशालय मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार तथा अखिल भारतीय हिंदी प्रचार परिषद, गुजरात के संयुक्त तत्वावधान में गांधीनगर इण्टरनेशनल पब्लिक स्कूल, गांधीनगर में हिंदीत्तर भाषी हिंदी नवलेखक शिविर का उद्घाटन समारोह प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. केशुभाई देसाई की अध्यक्षता में, मुलजी भाई चौधरी एवं अरविंद शाह के मुख्य आतिथ्य एवं साहित्यकार राजेन्द्र परदेशी (लखनऊ), अनिरुद्ध सिंह सेंगर (गुना), श्रीमती कुलदीप कौर (दिल्ली) के विशेष आतिथ्य में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का संचालन शिविर निदेशक डॉ. कन्हैयालाल भट्ट (अध्यक्ष अ.भा.हिंदी प्रचार परिषद, गांधीनगर) ने किया। इस अवसर पर केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली की अनुसंधान अधिकारी श्रीमती गांधारी पांगती विशेष रूप से उपस्थित रहीं।

शिविर में विभिन्न प्रदेशों असम, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, आन्ध्र प्रदेश, केरल, उड़ीसा, वेस्ट बंगाल, गुजरात सहित मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, दिल्ली आदि से आए हिंदीत्तर भाषी नवलेखक उपस्थित रहे।

11 अक्टूबर 2013, कार्यक्रम के दूसरे दिन कविता सत्र आयोजित किया गया। इस सत्र में श्रीमती रजनी मोरवाल ने 'गीत के स्वरूप और नवगीत की विकासयात्रा' पर व्याख्यान दिया तथा लेखकों ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

12 अक्टूबर 2013, कार्यक्रम के तीसरे दिन कहानी सत्र का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ. बिन्दु भट्ट ने 'आधुनिक उपन्यास की रचना प्रक्रिया और प्रयोगशीलता' पर व्याख्यान दिया। इस सत्र में कहानी लेखकों ने अपनी कहानी का पाठ किया।

13 अक्टूबर 2013, कार्यक्रम के चौथे दिन प्रथम सत्र में साहित्य की विभिन्न विधाओं आलेख, निबंध, अनुवाद, यात्रा संस्मरण, जीवनी पर आधारित सत्र का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पंकज त्रिवेदी ने 'रचना प्रक्रिया' पर अपना व्याख्यान दिया साथ ही निबंध, संस्मरण, यात्रा, जीवनी के स्वरूप पर भी चर्चा की। इस अवसर पर कुछ लेखकों ने जीवनी, शोध आलेख, निबंध, जीवनवृत्त आदि पढ़कर सुनाया।

कार्यक्रम के द्वितीय सत्र में कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें स्थानीय कवियों के अतिरिक्त हिंदीत्तर भाषी हिंदी कवियों ने भी काव्य पाठ किया। कवि-सम्मेलन का प्रभावी संचालन डॉ. कन्हैयालाल भट्ट एवं अनिरुद्ध सिंह सेंगर ने संयुक्त रूप से किया। इस अवसर पर डॉ. गांधारी पांगती, श्रीमती कुलदीप कौर, राजेन्द्र परदेशी, पंकज द्विवेदी, दीनदयाल जी विशेष रूप से उपस्थित रहे।

14 अक्टूबर 2013, कार्यक्रम के पाँचवे दिन गुना से पधारे साहित्य क्रान्ति मासिक पत्रिका के संपादक एवं मार्गदर्शक अनिरुद्ध सिंह सेंगर की अध्यक्षता में पत्रकारिता, संस्मरण एवं नाटक पर सत्र का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रो.फूलचन्द गुप्ता ने 'आधुनिक पाश्चात्य काव्य शास्त्र और उसका भारतीय साहित्य पर प्रभाव' विषय पर व्याख्यान दिया। इस अवसर पर लेखकों ने नाटक, एकांकी, कविता, लघुकथा, संस्मरण, कहानी का वाचन किया।

16 अक्टूबर 2013, को साहित्य की विभिन्न विधाओं पर सत्र का आयोजन किया गया। इस दिन प्रो. आलोक गुप्ता ने 'शुद्ध हिंदी कैसे लिखें' और 'हिंदी भाषा और व्याकरण' की जानकारी नवलेखकों को विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से दी। इसी दिन शिविरार्थियों ने शिविर के अनुभव आपस में बाँटे।

17 अक्टूबर 2013, को गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र भाई मोदी जी से हिंदी साहित्यकारों की सौजन्य भेंट हुई।

शिविर आयोजन की सफलता में शिविर निदेशक डॉ. कन्हैयालाल भट्ट की सराहनीय भूमिका रही।

अनिरुद्ध सिंह सेंगर की रिपोर्ट

ऑथर्स गिल्ड ऑफ इंडिया का 39वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन सम्पन्न

मुख्य अतिथि श्री डी.पी लोकवाणी, विशिष्ट अतिथि कालिदास, डॉ. कृष्णकान्त चतुर्वेदी, पद्मश्री श्याम सिंह शशि, डॉ. सरोजिनी प्रीतम, डॉ. उषा दुबे, भगवत दुबे सहित उपस्थित गणमान्य अतिथि

जबलपुर के होमसाईंस महाविद्यालय के प्रेक्षा गृह में दिनांक 28 एवं 29 दिसम्बर 2013 (शनिवार एवं रविवार) के दिन ऑथर्स गिल्ड ऑफ इंडिया का 39 वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन कई संगोष्ठियों एवं विभाजित पाँच सत्रों तथा उद्घाटन एवं समापन सत्रों के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में कुलपति मध्य प्रदेश आर्य विज्ञान यूनिवर्सिटी डी.पी लोकवाणी, विशिष्ट अतिथि के रूप में पूर्व अध्यक्ष कालिदास साहित्य अकादमी डॉ. कृष्णकान्त चतुर्वेदी के साथ पद्मश्री श्याम सिंह शशि, गिल्ड की उपाध्यक्षा डॉ. सरोजिनी प्रीतम, वीमेन्स कॉलेज के हिन्दी विभाग की अध्यक्षा डॉ. उषा दुबे, प्रसिद्ध साहित्यकार भगवत दुबे आदि मंचासीन हुए। दीप प्रज्ज्वलन एवं सरस्वती वन्दना से कार्यक्रम आरंभ किया गया। गिल्ड के महामंत्री डॉ. शिवशंकर अवस्थी ने देश के विभिन्न भागों (कश्मीर से कन्याकुमारी तक) से पधारे 150 लेखक एवं कवि तथा साहित्यकारों व स्थानीय साहित्यकारों का स्वागत करते हुए अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

लेखकीय चुनौतियाँ, विषय आघृत इस संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह में मंचासीन विद्वानों के मतानुसार लेखक शब्दों की शल्य क्रिया कर काव्य, उपन्यास, कहानी और व्यंग की रचना करता है, वह एक सृजनकर्ता है। फिर भी लेखक को कई चुनौतियों से दो-चार होना पड़ता है। कभी रॉयल्टी के लिए तो कभी प्रकाशन के लिए। ये समस्याएँ देश के हर कोने में लेखक को परेशान करती है।

उद्घाटन के अवसर पर पुस्तकों का लोकार्पण कार्यक्रम भी सम्पन्न हुआ। हैदराबाद से पधारे डॉ॰ अहिल्या मिश्र के प्रधान सम्पादकत्व में प्रकाशित पत्रिका 'पुष्पक' का 24 वाँ अंक, डॉ. रमा द्विवेदी की हाइकू संग्रह के साथ कुल 25 पुस्तकों का इस मंच से लोकार्पण किया गया।

अधिवेशन के प्रथम दिन उद्घाटन के पश्चात विचार मंथन से युक्त लेखकीय चुनौतियों का प्रथम सत्र डॉ. हीरालाल बाछोतिया की अध्यक्षता एवं डॉ. अहिल्या मिश्र चैप्टर संयोजिका हैदराबाद के संचालन में प्रभा मेहता (नागपुर), संतोष श्रीवास्तव (मुंबई), डॉ. राजलक्ष्मी कृष्णन (चेन्नई), डॉ. सुषमा सिंह (आगरा), ज्योति गजभिये (मुंबई), सुलोचना (सेलम), डॉ. रघुनंदन तिवारी (नई दिल्ली) ने सात प्रपत्रों की प्रस्तुति दी। सभी वर्तमान समस्याओं को लेखकी चुनौती बतलाए। इसके पश्चात दूसरे, तीसरे एवं चौथे सत्र में सायं 5 बजे तक प्रपत्र प्रस्तोता अपने विचार रखते रहे।

सायं 6 बजे से देर रात तक काव्य संध्या का आयोजन सम्पन्न हुआ। इसमें मुख्य अतिथि डॉ. श्याम सिंह शशि, सम्मानीय अतिथि डॉ. कृष्ण कान्त चतुर्वेदी पूर्व अध्यक्ष कालीदास साहित्य अकादमी, अध्यक्ष डॉ. सरोजिनी प्रीतम के साथ संचालक द्वय हैदराबाद की डॉ. अहिल्या मिश्र एवं नागपुर के नरेंद्र परिहार के साथ देश के कोने-कोने से पधारे लगभग 58 कवियों ने कई भाषाओं में काव्य पाठ किया। हैदराबाद की डॉ. रमा द्विवेदी, श्रीमती विनीता शर्मा एवं सम्पत देवी मुरारका के साथ नागपुर के 15 कवि एवं कवयित्री, प्रदीप सुमन (रीवा), डॉ. ए.कीर्तिवर्धन (मुज्जफर नगर), रेखा रौशनी व अन्य 7 (मुंबई), पंकज अंगार (ललितपुर झाँसी), डॉ. प्रियंका सोना 'प्रीत' (जलगाँव), डॉ. पांडुरंग शिरगावकर एवं 4 अन्य (गोवा), बाला शुभ्रमण्यम् (चेन्नई), लक्ष्मण बेहड़िया (छिन्दवाडा), डॉ. सेतु रामण (चेन्नई), सालेम वालन (केरल), अन्य 4 कवि (चेन्नई), अमिय अधर 'निडर' (आगरा), शशि गोयल, शशिकला अग्रवाल, अशोक 'अश्रु' (आगरा), रेखा व्यास (नई दिल्ली), रमा वर्मा (उत्तर प्रदेश), रामवीर शर्मा उर्फ़ रामू भैया (कोटा-राजस्थान), डॉ. गोरम कार्तियान (केरल), डॉ. लक्ष्मी शर्मा (जबलपुर), आचार्य भगवत दुबे, गार्गी शरण मिश्र मराल, डॉ. ऊषा दुबे, दीपक तिवारी सभी जबलपुर एवं सुरेश शर्मा (गुड़गाँव), रामाश्रय गोयल (उत्तर प्रदेश) के साथ अन्य कई कवियों ने काव्य पाठ किया। सभी रसों एवं विभिन्न भाषाओं (हिंदी, अंग्रेज़ी, तमिल, तेलगु, राजस्थानी) आदि में कविता पाठ सम्पन्न हुआ। शिवशंकर अवस्थी ने काव्य पाठ एवं धन्यवाद दिया। दूसरे दिन तीन सत्रों में लेखकीय चुनौतियों पर विचार किया गया।

अन्त में खुले सत्र में सभी चैप्टरों के संयोजक तथा कार्यकारिणी सदस्यों एवं अन्य सभी सदस्यों के साथ गिल्ड से जुड़ी समस्याओं एवं इसके विकास तथा इसमें मज़बूती लाने सम्बंधी कई आवश्यक बातों पर विचार विमर्श करते हुए कुछ प्रस्ताव पास किए गए। डॉ. शिवशंकर अवस्थी ने इस सत्र का संचालन करते हुए सभी लेखकों को उनकी सहभागिता के लिए धन्यवाद दिया।

संपत देवी मुरारका की रिपोर्ट

'श्रीलाल शुक्ल की कथा भाषा और व्यंग्य' पर राष्ट्रीय संगोष्ठि संपन्न

संगोष्ठी में उपस्थित गणमान्य अतिथि

संस्कृत साहित्य में व्यंग्यात्मक लेखन की अत्यंत पुष्ट परंपरा रही है। आधुनिक कथासाहित्य में श्रीलाल शुक्ल ने इस परंपरा को नए सन्दर्भों में पुनर्जीवन प्रदान किया है। उन्होंने 'राग दरबारी' जैसे उपन्यास के माध्यम से हिंदी कथा साहित्य को एक नई शैली प्रदान की। भाषा की व्यंजना शक्ति का भरपूर प्रयोग करते हुए श्रीलाल शुक्ल ने आज़ादी के बाद के एक भारतीय गांव के रूपक के माध्यम से समकालीन, सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक विसंगतियों पर चुटिला व्यंग्य किया तथा इन परिस्थितियों से आजिज़ आकर भाग खड़े होने वाले बुद्धिजीवियों के छद्म को भी खोल कर सामने रखा।

ये विचार यहाँ आन्ध्र प्रदेश हिंदी अकादमी के सभागार में 31 दिसम्बर 2013 को कथाकार श्रीलाल शुक्ल के 89 वें जन्मदिवस पर आयोजित 'श्रीलाल शुक्ल की कथा भाषा और व्यंग्य' विषयक एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में उस्मानिया विश्वविद्यालय और ईफ्लू के पूर्व आचार्य डॉ. एम.वेंकटेश्वर ने बतौर मुख्य वक्ता व्यक्त किए।

निरंतर 7 वर्षों से आयोजित होने वाली संगोष्ठी श्रृंखला की नवीनतम कड़ी के रूप में संपन्न इस कार्यक्रम की अध्यक्षता मेरठ विश्वविद्यालय के पूर्व आचार्य डॉ. कृष्ण चन्द्र गुप्त ने की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि एक व्यंग्यकार के रूप में श्रीलाल शुक्ल का स्थान इसलिए अत्यंत विशिष्ट है कि उन्होंने व्यवस्था के भीतर रहते हुए उसकी विकृतियों को पहचान कर अभिव्यक्ति के हथियार की तरह व्यंग्य का सहज प्रयोग किया है।

'भास्वर भारत' के संपादक डॉ. राधेश्याम शुक्ल ने साहित्य, सत्ता, संस्कृति और मनुष्यता के संबंधों पर प्रकाश डालते हुए यह प्रतिपादित किया कि श्रीलाल शुक्ल ने अपने उपन्यास साहित्य के माध्यम से नहरू युग की विफलताओं से आक्रान्त जनमानस की यथार्थ अनुभूतियों को सटीक अभिव्यक्ति प्रदान की है। इसी क्रम में प्रो. शुभदा वांजपे ने कहा कि श्रीलाल शुकल ज़मीन से जुड़े ऐसे कथाकार हैं जिन्होंने 'राग दरबारी' और सफल महाकाय उपन्यास पारिवारिक परिवेश और स्त्री पात्रों के बिना रच कर व्यंग्य की मौलिक शैली स्थापित की।

इस अवसर पर आन्ध्र प्रदेश सरकार के शासकीय मुद्रणालय से सम्बद्ध आई.पी.एस. अधिकारी श्रीराम तीवारी ने विशिष्ट अतिथि के रूप में बोलते हुए कहा कि साहित्य समाजोपयोगी होने के कारण कालजयी माना जाएगा।

इसी प्रकार सम्माननीय अतिथि पूर्व जिला कलेक्टर जगदीश प्रताप सिंह, आई.ए.एस. ने अपने संबोधन में इस बात पर बल दिया कि साहित्य को सामाजिक संबंधों और राष्ट्रीय संस्कृति की रक्षा के लिए सदा सन्नद्ध रहना चाहिए।

आरंभ में आकाश तिवारी ने शंखनाद एवं सरस्वती वन्दना की। मंगलदीप प्रज्ज्वलन के बाद अतिथियों का स्वागत सत्कार किया गया।

कार्यक्रम की संयोजना डॉ. सीमा मिश्रा ने संगोष्ठी के मूल विषय का प्रवर्तन करते हुए अपना आलेख प्रस्तुत किया जिसमें यह कहा गया कि श्रीलाल शुक्ल ने अपने साहित्य के केंद्र में 'साधारण' की प्रतिष्ठा की तथा इसके लिए किस्सागोई से लेकर व्यंग्य तक का सधा हुआ उपयोग किया।

संचालक डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा ने अपने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि श्रीलाल शुक्ल का यह मत विचारणीय है कि व्यंग्य सत्य की खोज नहीं, बल्कि झूठ की खोज है तथा व्यंग्य के टेढ़े-मेढ़े रास्ते से गुज़र कर व्यंग्यकार उन मूल्यों तक पहुंचते हैं जो उत्कृष्ट साहित्य का अंतिम लक्ष्य होते हैं।

इस अवसर पर उत्कृष्ट साहित्य सृजन और हिंदी सेवा के लिए कवयित्री एवं लेखिका डॉ. पूर्णिमा शर्मा तथा तेवरी काव्यान्दोलन के प्रवर्तक प्रो.ऋषभ देव शर्मा का सारस्वर सम्मान भी किया गया।

कार्य में नगरद्वय के विशिष्ट साहित्यकारों, हिंदी प्रेमियों, पत्रकारों, अध्यापकों और शोधार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

संयोजक सीमा मिश्रा के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ कार्यक्रम का विधिवत समापन हुआ।

'हैदराबाद से' ब्लॉग से साभार

http://hyderabadse.blogspot.com/2014/01/blog-post.html

दिव्या माथुर की 2 पुस्तकों ''मेड इन इंडिया'' और ''हिंदी@स्वर्ग.इन'' का लोकार्पण

ब्रिटेन की प्रसिद्ध लेखिका दिव्या माथुर की दो पुस्तकों 'मेड इन इंडिया' और 'हिंदी@स्वर्ग.इन' का लोकार्पण बुधवार को अक्षरा थियेटर में पूर्व राजनयिक व प्रसिद्ध लेखक डॉ. पवन वर्मा द्वारा किया गया। इस अवसर पर डॉ. वर्मा ने अपने लंदन प्रवास को याद करते हुए कहा कि मैं लेखिका के रूप में दिव्या जी का आदर करता हूँ और लेखन प्रवासी जीवन का दर्पण है। वहीं राजकिशोर ने कहा कि प्रवासी साहित्य में दिव्या माथुर के साहित्य का अपना विशिष्ट स्थान है। इसके कई कारण हैं। प्रथमत: दिव्या जी मानव मस्तिष्क के गूढ़ धरातल पर उठने वाले संवेगों के अनुसार अपने पात्रों को ढालती हैं, जो अपने विविध रूपों में विविध पात्रों के साथ साकार होते हैं। इसमें प्रेम का तत्व सबसे प्रबल कारक है। मैं रोमांटीसिज़्म का समर्थक हूँ तथा मेरा मानना है कि दिव्या जी के विभिन्न पात्रों के बीच में स्नेह और प्रेम का संबंध जीवन के प्रति लेखिका के अपने विचार का परिचायक है। उन्होंने कहा कि मुहावरों का प्रयोग उनकी कहानियों की विशेषता है। इस अवसर पर वरिष्ठ पत्रकार आलोक मेहता ने कहा कि दिव्या माथुर का सबसे बड़ा योगदान भारत के बाहर अपनी लेखनी से भारत की संस्कृति की तमाम विशेषताओं को समेट कर भारत का निर्माण करना है। आज विदेशों में लोग ऐसे लेखकों के माध्यम से भारत को जानते हैं। उन्होंने 'मेड इन इंडिया' कहानी का उल्लेख करते हुए, उसके पात्र सतनाम का विशेष उल्लेख किया।

अजय नावरिया ने माथुर की 'पंगा' कहानी को रेखांकित करते हुए कहा कि प्रवासी साहित्य अब हाशिए का साहित्य नहीं रहा। डॉ. कमल किशोर गोयनका ने प्रेमचंद को उद्धत करते हुए कहा कि प्रवासी साहित्य को प्रेमचंद ने भी सराहा था। इस अवसर पर दिव्या माथुर की कहानी '2050' की नाट्य प्रस्तुति वयम नाट्य संस्था द्वारा फ्यूचर परफैक्ट.इदम पूर्णम शीर्षक से की गई।

www.pravasiduniya.com

'डॉ॰ राकेशगुप्त रचनावली' का प्रकाशन साहित्य जगत् की विलक्षण घटना

समारोह के मुख्य अतिथि व विशिष्ट अतिथियों द्वारा 'डॉ. राकेशगुप्त रचनावली' का लोकार्पण

4 अक्टूबर 2013 को 'डॉ॰ राकेशगुप्त रचनावली' का लोकार्पण किया गया। डॉ. राकेशगुप्त न केवल प्रख्यात शिक्षाविद् थे, अपितु सुधी समीक्षक, सहृदय कवि, निर्भीक प्रशासक के रूप में भी उनकी प्रसिद्धि रही है। इन सबके अतिरिक्त वे सर्वोपरि एक अच्छे मनुष्य थे, जिनकी मनुष्यता की सुगंध आज तक महसूस की जाती है। इस तरह के उद्गार 'डॉ. राकेशगुप्त रचनावली' (पाँच खंड) के लोकार्पण के अवसर पर विभिन्न विद्वानों ने व्यक्त किए। समारोह की अध्यक्षता प्रो. सतीशचन्द्र जैन (कुलपति, मंगलायतन विश्वविद्यालय) ने की और रचनावली की विदूषी संपादिका डॉ. निरजा टंडन (प्रोफ़ेसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल) मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं। विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. शांतिस्वरूप गुप्त (पूर्व कुलपति, आगरा विश्वविद्यालय) एवं आचार्य श्रीनिवास मिश्र ने समारोह को समृद्ध बनाया।

अभयकुमार गुप्त की रिपोर्ट

डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र की रचनाधर्मिता' का लोकार्पण

2 दिसम्बर 2013 को महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी के पत्रकारिता संस्थान सभागार में प्रसिद्ध नवगीतकार डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र पर केन्द्रित पुस्तक 'डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र की रचनाधर्मिता' का लोकार्पण कुलपति डॉ. पृथ्वीश नाग एवं डॉ. अनुराधा बनर्जी के हाथों हुआ।

कार्यक्रम का शुभारम्भ माँ वागेश्वरी के समक्ष डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र ने 'अपनी चिट्ठी बूढ़ी माँ मुझसे लिखवाती है / जो भी मैं लिखता हूँ / वह कविता बन जाती है' गीत पढ़कर की। तत्पश्चात इस पुस्तक के संपादक डॉ. अवनीश सिंह चौहान ने बुद्धिनाथ मिश्र की रचनाधर्मिता पुस्तक का विस्तार से परिचय देते हुए कहा कि डॉ. मिश्र के भारतीय जीवन के विविध सरोकारों के प्रति सजगता एवं संवेदनशीलता जहाँ 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को उद्घाटित करती है वहीं सहृदयों को इस आयाम पर चिन्तन करने की प्रेरणा भी प्रदान करती है। मिश्र जी न केवल हिन्दी के बल्कि मैथलीय साहित्य के अद्वितीय हस्ताक्षर हैं। उनकी भाषा में शक्ति है, सम्प्रेषणीयता है और शब्द सामंजस्य है।

सृजनगाथा से साभार

डॉ. अजीत गुप्ता के सम्मान में काव्य संध्या

काव्य संध्या में उपस्थित गणमान्य अतिथि

1 अक्टूबर को इंडिया काईंडनेस मुवमेंट एवं कादंबिनी क्लब, हैदराबाद के संयुक्त तत्वावधान में श्रीकृष्ण मुरारका पैलेस, हैदराबाद में सम्मान कार्यक्रम एवं काव्य-संध्या का आयोजन किया गया।

भारत विकास परिषद के राष्ट्रीय चेयरमैन डॉ. अजीत गुप्ता के सम्मान में काव्य-संध्या आयोजित की गई। इस अवसर पर डॉ. ऋषभदेव शर्मा, अध्यक्ष, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, द.भा.हि. प्रचार सभा, खैरताबाद, प्रो. शुभदा वांजपे, हिंदी विभागाध्यक्ष अस्मानिया विश्वविद्यालय, डॉ. अहिल्या मिश्र, सम्पत देवी मुरारका, रत्नालाल साबू (अध्यक्ष, हैदराबाद-सिकन्दराबाद मारवाड़ी महिला संगठन) मंचासीन हुए। तनूजा व्यास ने सभी का स्वागत किया तथा सम्पत देवी मुरारका ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की।

डॉ. अजीत गुप्ता ने कहा कि हैदराबाद में साहित्यिक माहौल प्रभावित करता है। तनूजा व्यास के संचालन में आयोजित काव्य संध्या में विनीता शर्मा, नीरजा, पवित्रा अग्रवाल, सम्पत देवी मुरारका, डॉ. अहिल्या मिश्र, सुषमा बैद, सरिता सुराणा जैन, हेमलता शर्मा, लता व्यास, पुष्पा वर्मा, सुरेश जैन, लीला बजाज, प्रो. ऋषभदेव शर्मा, रत्नमाला साबू, डॉ. अजीत गुप्ता, प्रो. शुभदा वांजपे, प्रिया गर्ग, आनिया अग्रवाल ने काव्य पाठ किया। इस अवसर पर प्रिया गर्ग, राजेश मुरारका, वी. कृष्णा राव, साहिती, विनोद कुमार अग्रवाल, सिमरन अग्रवाल, सीता अग्रवाल, गीता अग्रवाल, श्रीनिवास माहेश्वरी, आशा माहेश्वरी, सरोज शर्मा, सन्नी गर्ग, भूपेंद्र मिश्र, सी.एम. दयानंद आदि उपस्थित थे।

संपत देवी मुरारका की रिपोर्ट

श्री काका कुँवरचन्दजी अजोधा

23 सितंबर, 2013 को 85 वर्ष की उम्र में श्री काका कुँवरचन्दजी अजोधा का निधन हो गया। आपने दक्षिण अफ्रीका के खौटेंग शहर में हिंदी के प्रचार तथा उन्नयन के लिए अमूल्य योगदान दिया है।

सन् 1960 के अंतिम दौर में पं. नरदेवजी वेदालंकार, श्री कुंजबिहारी बालगणेश तथा श्री सुक्राजी चोताइ ने खौटेंग में हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु समितियों की स्थापना करने के उद्देश्य से खौटेंग का दौरा किया। उनके संघर्ष ने 1968 में प्रिटोरिया हिंदी सेवा समाज को बढ़ावा दिया।

बेनोनी हिंदी शिक्षा संघ की स्थापना हिंदी के क्षेत्र में अधिक विकास लाया तथा हिंदी पाठशालाओं के माध्यम से संघ के उद्देश्यों का प्रचार जारी रहा। वस्तुत: सन् 1970 में श्री काका कुँवरचन्दजी अजोधा, ने सनातन वेद धर्म सभा के माध्यम से खौटेंग में संघ के कार्यों को विधिसंगत बनाने की ज़िम्मेदारी ली। आप तथा सनातन वेद धर्म सभा के सदस्यों ने लेनेशिया में सनातन वेद धर्म सभा के सभागार में हिंदी सम्मेलनों के आयोजनों की ज़िम्मेदारी ली।

काका अजोधा ने सम्मेलनों के लिए ट्रॉफ़ीयाँ तथा पुरस्कार प्रस्तुत किए। उनके बाद डॉ. शाह ने हिंदी के प्रचार का कार्य जारी रखा।

खौटेंग हिंदी खबर – अकटूबर 2013 अंक से साभार

प्रो. शर्मा अंतरराष्ट्रीय स्तर के हिंदी सेवा सम्मान से अंलकृत

'विश्व हिंदी सेवा सम्मान' से विभूषित प्रो. शैलेंद्रकुमार शर्मा

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के कुलानुशासक एवं समालोचक प्रो. शैलेंद्रकुमार शर्मा को बैंकॉक (थाईलैण्ड) में विश्व हिंदी मंच एवं सिल्पाकॉर्न विश्वविद्यालय, बैंकॉक के संयुक्त तत्वावधान में 17-21 अक्टूबर तक आयोजित अंतरराष्ट्रीय कांफ्रेस में 'विश्व हिंदी सेवा सम्मान' से अलंकृत किया गया। उन्हें यह सम्मान सिल्पाकॉर्न विश्वविद्यालय के सभागार में आयोजित समारोह में थाईलैण्ड के प्रख्यात विद्वान प्रो. चिरापद प्रपंडविद्या, संस्कृत स्टडी सेंटर के निदेशक डॉ. सम्यंग ल्युमसाइ एवं हिंदी के प्रो. बमरूंग खामीक के कर-कमलों से अर्पित किया गया।

प्रो. शर्मा को यह सम्मान विगत ढाई दशकों से हिंदी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति के क्षेत्र में किए गए उल्लेखनीय लेखन एवं कार्यों के लिए अर्पित किया गया। इस सम्मेलन में भारत, मॉरीशस एवं थाईलैंड के सौ से अधिक विद्वान, संस्कृतिकर्मी एवं साहित्यकार उपस्थित थे ।

डॉ.अनिल जूनवाल (संयोजक)

पंडित हरिदेव सहतू : सूरीनाम में हिंदी के महत्वपूर्ण स्तंभ

29 दिसंबर 1942 को पारामारिबो, सूरीनाम में जन्मे पंडित हरिदेव सहतू हिंदी भाषा के प्रति समर्पित रहे और सूरीनाम में हिंदी के विकास का एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्तंभ रहे। सन् 1959 से जीवन पर्यंत नि:शुल्क हिंदी शिक्षण करते रहे। आपने आरंभ में स्थानीय पाठशालाओं के मुख्य अध्यापक का कार्य किया व साथ ही 1962 में इंडियन कॉउन्सिल ऑफ़ कल्चरल रिलेशन्स के प्रतिनिधि बाबू महातम सिंह जी के सूरीनाम पहुँचने पर हिंदी सीखना और सिखाना आरंभ किया अवकाश प्राप्त होने के बाद भी।

उनके निधन पर उनके एक शिष्य ने लिखा था - ''हम अनाथ हो गए हैं, हमारा मार्गदर्शन कौन करेगा अब'' उनका स्नेह ही ऐसा था। वे हमेशा ऊर्जा और उत्साह से लबालब रहे और सदैव ही एक नई योजना और नए सपने के साथ मिले। उनका सपना था एक ऐसा संकलन जिसमें सूरीनाम के सभी कवियों की रचनाओं को स्थान मिले और यह संभव हुआ 'एक बाग के फूल' काव्य संग्रह से जिसमें 27 कवियों की रचनाएँ संकलित हैं।

आपकी कृतियों में सूरीनाम में हिंदी भाषा और साहित्य के विकास का इतिहास, आओ हिंदी सीखें व उसकी सहायक पुस्तिका, कई लेख व स्फुट कविताएँ सम्मिलित हैं। उन्होंने कभी किसी सम्मान के लिए कार्य नहीं किया।

14 अगस्त 2013 को उनके जाने पर हिंदी जगत को बहुत बड़ी क्षति हुई। समस्त हिंदी जगत की ओर से उनको श्रद्धांजलि।

भावना सक्सैना

कवि ज्ञानेन्द्र कुमार को महर्षि कण्व साहित्य सम्मान-2013

'महर्षि कण्व साहित्य सम्मान' से विभूषित कवि ज्ञानेन्द्र कुमार

देहरादून: 17 दिसम्बर 2013, कला, संगीत और साहित्य में बेहतर योगदान देने के लिए प्रसिद्ध कवि ज्ञानेन्द्र कुमार को महर्षि कण्व साहित्य सम्मान-2013 पुरस्कार से सम्मानित किया गया। हर साल की तरह इस बार भी कोटद्वार की महर्षि कण्व सम्मान समिति की ओर से सम्मान समारोह 2013 का आयोजन परेड मैदान स्थित हिंदी भवन में किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ विशिष्ट अतिथि शिक्षाविद् डॉ. एच.एन.त्रिपाठी ने किया। इस दौरान समिति के अध्यक्ष डॉ. पी.सी.जोशी ने डॉ. ज्ञानेन्द्र, डॉ.गिरीश चन्द्र जोशी और उनकी पत्नी डॉ. पुष्पा तथा डॉ. जे.एस.राठौर को शॉल, प्रशस्ति पत्र और प्रतीक चिह्न देकर सम्मानित किया। इस दौरान प्रकाशी जुयाल, ओम खंडूड़ी, एम.एल.जोशी, आराध्या जोशी ,सुधीन्द्र नौटियाल, वीरेन्द्र डंगवाल, अमर सिंह गुसाईं, श्री जगदीश बावला, डॉ. रामविनय सिंह तथा श्री मृणाल जोशी आदि उपस्थित थे।

श्रद्धांजलि

कविता के श्रेष्ठ आलोचक परमानंद श्रीवास्तव

सुप्रसिद्ध आलोचक परमानंद श्रीवास्तव (1935-2013) का 5 नवम्बर 2013 को गोरखपुर में 78 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आधी सदी से भी ज़्यादा के अपने रचनात्मक जीवन में उन्होंने आलोचना की एक दर्जन पुस्तकें लिखीं। उनकी बारह आलोचना संबंधी पुस्तकें हैं। उनके छः कविता संग्रह हैं। 'मेरे साक्षातकार' शीर्षक से उनके साक्षात्कारों की पुस्तक 2005 में प्रकाशित हुई। उनके दो निबंध संग्रह प्रकाशित हैं। उन्होंने पाब्लो नेरुदा की 70 कविताओं का अनुवाद किया और साहित्य अकादमी से निराला और जायसी पर उनके दो मोनोग्राफ़ प्रकाशित हुए। साहित्य अकादमी से ही 'समकालीन हिन्दी कविता' और 'समकालीन हिन्दी आलोचना' के संचयन उनके संपादन में क्रमश: 1990 और 1998 में निकले। लम्बे समय तक वे 'आलोचना' पत्रिका से जुड़े रहे, पहले नामवर सिंह के संपादक रहते हुए - उनके साथ सह-संपादक के रूप में, फिर संपादक के बतौर और इस दरम्यान दोनों आलोचकों ने इस पत्रिका को रचना और विचार की एक समर्थ और अग्रणी पत्रिका के रूप में निखार दिया।

कविता के श्रेष्ठ आलोचक और भी रहे और हैं, लेकिन कविता को एक असमाप्त जीवंत-प्रक्रिया के रूप में देखना, समझना और उसमें डूब कर प्यार करना परमानंद जी का अपना निराला रास्ता था। उन्होंने कविता के अर्थ, कविता में बहते समय, कविता और समाज के रिश्ते, कविता और पाठक के बीच संवाद पर लगातार विचार किया और उसे जीवनानुभूति और जीवन-ज्ञान के एक समानांतर संसार की तरह समझा। काव्य-भाषा पर उनकी गहरी पकड़ थी, लेकिन नयी कविता के संस्कार में दीक्षित आलोचकों की तरह उन्होंने उसे एकमात्र या सर्वोपरि निकष नहीं बनाया। भक्ति-काल से लेकर बिलकुल अभी तक की कविता पर उन्होंने लिखा। हिन्दी कविता में जितने कवियों पर उन्होंने लिखा, शायद अन्य किसी आलोचक ने नहीं लिखा और जिन पर उन्होंने लिखा उनमें समकालीन कविता के नव्यतम हस्ताक्षर तक शामिल हैं। उपन्यास और कहानी पर लिखते हुए भी वे बराबर नव्यतम पीढ़ी के रचना संसार से रिश्ता जोड़े रहे। स्त्री जीवन पर केन्द्रित और खुद स्त्रियों द्वारा लिखे साहित्य को उन्होंने खास तौर पर रेखांकित किया और स्त्री रचनाशीलता की अपनी अलग शख्सियत को महत्व दिया। परमानंद जी ने आधुनिक भारतीय कविता के बुनियादी सेक्युलर चरित्र का बारम्बार रेखांकन करते हुए मराठी, बांगला, मलयालम, उडिया, असमिया, पंजाबी, कन्नड़ आदि भाषाओं की समकालीन रचनाशीलता को भी सामने रखा।

उन्होंने लिखा है, 'कविता शब्दों में या शब्दों से लिखी ज़रूर जाती है पर साथ ही अपने बाहर या आसपास वह जगह भी छोड़ती चलती है जिसे पाठक अपनी कल्पना और समय के अनुरूप भर सकता है।' परमानंद श्रीवास्तव की आलोचना के बारे में भी बहुत हद तक यही बात कही जा सकती है।

परमानंद जी का जाना साहित्य की दुनिया में एक बड़ी क्षति है। उनको श्रद्धांजलि।

सुधीर सुमन

राष्ट्रीय सह-सचिव, जन संस्कृति मंच

भानुमती नागदान

मॉरीशसीय हिंदी साहित्य का सबसे प्रबल महिला स्वर सदा के लिए मौन

प्रसिद्ध मॉरीशसीय हिंदी साहित्यकार, सुश्री भानुमती नागदान का 18 नवंबर 2013 को देहान्त हो गया। आप मॉरिशस में हिंदी साहित्य के क्षेत्र में अत्यन्त लोकप्रिय व सम्मानित लेखिका रही हैं जिनकी लेखनी ने मॉरिशस के समाज, उसकी समस्याओं तथा विशेषकर इस देश की नारी के प्रति एक अत्यन्त आधुनिक दृष्टिकोण उजागर किया।

सुश्री नागदन का जन्म 12 जुलाई 1933 को मॉरीशस के रोज़ हिल शहर के निवासी व माहवा गाँव, सौराष्ट्र भारत से आए श्री नारएदार हवाभाई के परिवार में हुआ। सुश्री नागदान ने गुजराती, हिंदी, अंग्रेज़ी और फ्रेंच भाषाओं की शिक्षा प्राप्त की तथा अध्यापन कार्य में संलग्न हुईं।

अध्यापन के अतिरिक्त सुश्री भानुमती नागदान ने अपनी संकल्प शक्ति व अपनी प्रतिभा को लिए हुए साहित्य जगत में प्रवेश किया तथा 1993 में जब उन्होंने अपना प्रथम कहानी संग्रह मिनिस्टर प्रकाशित किया तब वे मॉरीशसीय हिंदी साहित्य लेखन के अब तक पुरुष प्रधान जगत में पूरे साहस के साथ अपना नाम लिखवाने आईं। सुश्री भानुमती नागदान ने मिनिस्टर के बाद साहित्य रचना का कार्य जारी रखा व अनेक पत्र पत्रिकाओं व संकलनों में प्रकाशित होती रहीं। 1993 में उनका एक और संकलन 'दरार' प्रकाशित हुआ। हिंदी के अतिरिक्त सुश्री भानुमती नागदान अंग्रेज़ी में भी लेखनी चलाती थी और 2009 में उन्होंने 'Dawn' शीर्षक से एक संग्रह का प्रकाशन किया। कहानी के अतिरिक्त नागदान जी ने नाटक और कविताएँ भी लिखीं।

नागदान जी की रचनाओं में नारी विमर्श, नारी के प्रति अत्याचार, नारी शक्ति, आधुनिक नारी तथा उसके अधिकार आदि भाव उजागर होते हैं। वे न केवल स्वयं मॉरीशसीय हिंदी साहित्य की सबसे महत्वपूर्ण महिला लेखिका रही हैं बल्कि उनका विशेष योगदान इस रूप में भी रहा है कि उनकी प्रसिद्ध ओजस्वी व अदम्य वाणी सदैव सभी मंचों से मॉरीशसीय हिंदी साहित्य में महिलाओं के स्थान व योगदान के लिए आन्दोलन की उद्घोषणा करती रहीं।

हिंदी जगत को उनके योगदान के लिए सुश्री भानुमती नागदान 1993 में चौथे विश्व हिंदी सम्मेलन में सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त 2003 में उन्हें महात्मा गांधी संस्थान की ओर से हिंदी सम्मान दिया गया तथा 2013 में मॉरीशसीय हिंदी साहित्य शताब्दी के उपलक्ष्य में विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा आयोजित समारोह में विश्व भाषा हिंदी सम्मान दिया गया।

साहित्य जगत के साथ-साथ सुश्री भानुमती नागदान समाज सेवा कार्यों में भी बहुत सक्रिय रहीं व उनके कार्यों के लिए वर्ष 2006 में उन्हें कात्र बोर्न नगरपालिका द्वारा मानद नागरिकता प्रदान की गई।

उनके प्रति श्रद्धांजलि स्वरूप मॉरीशस के हिंदी प्रेमियों ने 30 नवम्बर 2013 को महात्मा गांधी संस्थान, मोका, मॉरीशस के सुब्रमण्यम् भारती सभागार में एक शोक सभा का आयोजन किया था। इस अवसर पर भानुमती नागदान जी के परिवार के सदस्य, मित्र व पाठकों की ओर से उनके जीवन पर प्रस्तुति हुई तथा भानुमती जी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए जुटे हुए सभी लोगों ने भानुमती जे के साथ अपने-अपने व्यक्तिगत अनुभव बाँटे।

सुश्री भानुमती नागदान के स्वर्गवास पर उनके पुत्र आदर्श व बहु शालिनी के साथ-साथ संपूर्ण मॉरीशसीय हिंदी समाज शोकग्रस्त हुआ। विश्व हिंदी सचिवालय तथा समस्त हिंदी जगत की ओर से सुश्री भानुमती नागदान को श्रद्धांजलि।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

राजेन्द्र यादव का निधन

सोमवार दिनांक 28.10.2013 को रात में हिंदी के जाने-माने साहित्यकार राजेन्द्र यादव का 84 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। राजेन्द्र यादव को हिंदी साहित्य में नई कहानी के दौर को गढ़ने वालों में से एक माना जाता है।

29 अगस्त 1929 को आगरा (उ.प्र.) में जन्मे राजेन्द्र यादव की प्राथमिक शिक्षा आगरा में हुई। 1951 में उन्होंने प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान पाकर एम.ए. की उपाधि प्राप्त की थी। बाद में वे कलकत्ता चले गये तथा 1964 ई. में दिल्ली आये। यहाँ आकर वे लंबे समय तक अक्षर प्रकाशन चलाते रहे तथा बाद में प्रेमचंद द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'हंस' का दुबारा प्रकाशन शुरू किया। पिछले 27 वर्षों से वे हंस के संपादक थे। उनकी प्रकाशित पुस्तकों में 'सारा आकाश', 'उखड़े हुए लोग', 'शय और मात' (उपन्यास), 'जहां लक्ष्मी कैद' आदि महत्वपूर्ण हैं। स्त्री, दलित और आदिवासी विमर्श के क्षेत्र में उनहोंने हंस के ज़रिए एक सार्थक हस्तक्षेप किया जिसके चलते हिंदी संकाय उन्हें याद रखेगा।

राजेन्द्र यादव अपने लेखन में विस्तृतफलक के लिए जाने जाते हैं। शब्दों, संदर्भों, मिथकों, प्रतीकों का उपयोग उनके यहाँ पारंपरिक नहीं है, वे उनके नए अर्थ बोध ढूंढते रहते थे। जनवादी आंदोलन को उन्होंने अपना नेतृत्वकारी समर्थन दिया।

वे 2003 से 05 तक भारतीय भाषा केन्द्र की सलाहकार समिति के सदस्य रहे। पिछले वर्ष केन्द्र ने 'हमारे समय का साहित्य' पर उनके व्याख्यान का आयोजन किया था। उनके निधन से हिंदी साहित्य और संकाय के लिए अपूरण की क्षति हुई है। यह सभा राजेन्द्र यादव के प्रति भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करती है तथा उनके परिवार जनों एवं मित्रों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करती है।

भारतीय भाषा केंद्र, जे.एन.यू.

प्रधान संपादक

श्री गंगाधरसिंह सुखलाल

संपादन सहयोग

सुश्री श्रद्धांजलि हजगैबी, श्रीमती उषा राम, श्रीमती प्रीति नहुला, श्रीमती विजया सरजु

विश्व हिंदी सचिवालय
स्विफ्ट लेन, फ़ॉरेस्ट साइड, मॉरीशस
World Hindi Secretariat
Swift Lane, Forest Side, Mauritius
Phone: (230) 676 1196 - Fax: (230) 676 1224
Email: info@vishwahindi.com
Website: www.vishwahindi.com

Printed by
BAHADOOR PRINTING LTD.
Avenue St. Vincent de Paul – Pailles
Tel: (230) 208 1317

श्रद्धांजलि
बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे के.पी. सक्सेना

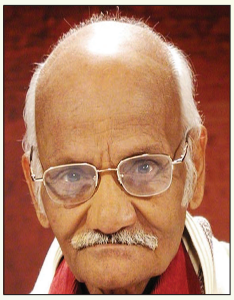

हिंदी गौरव, पद्मश्री के.पी.सक्सेना का 31 अक्टूबर 2013 को प्रात: 8.45 बजे निधन हो गया। उनका महाप्रयाण हिंदी भाषा एवं साहित्य की अपूरणीय क्षति है। भारतीय सभ्यता और संस्कृति के अनन्य पुजारी, रामकथा के मर्मज्ञ विद्वान, दार्शनिक, चिंतक, वैज्ञानिक, उन्हें नज़दीक से जाननेवाले उन्हें उनकी बहुत-सी खूबियों सहित जानते-बूझते थे। वह बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। हस्तलिपि फूलों से भी सुंदर। हिंदी, अंग्रेज़ी और उर्दू तीनों भाषाओं पर समान अधिकार रखनेवाले के.पी ने अभिव्यक्ति के जितने भी दृश्य और श्रव्य माध्यम हो सकते हैं, सबमें उत्कृष्ट साहित्य की रचना की। पत्र-पत्रिकाएँ-काव्यमंच-आकाशवाणी-दूरदर्शन और हिंदी फिल्म जगत, सभी जगह उन्होंने हिंदी के इस तरह झंडे गाड़े जो किसी एक व्यक्ति के बस की बात नहीं। लखनऊ का अदब तो के. पी. सक्सेना का लोहा मानता ही था, उनकी कलम के प्रशंसक मुंबई फिल्म इंडस्ट्री भी हुई, जब अपने जीवन के अंतिम दौर में उन्होंने 'हलचल', 'लगान', 'स्वदेश' और 'जोधा अकबर' जैसी सफल फिल्मों के खूबसूरत और दमदार संवाद लिखे। उन्हें भारत सरकार ने पद्मश्री सम्मान प्रदान किया और हाल ही में उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान उन्हें 'हिंदी गौरव' देकर स्वयं गौरवांवित हुआ । भावभीनी श्रद्धांजलि।

साभार: सुधाकर अदीब
सृजनगाथा

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में पुस्तक मेला

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के 16वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय के नजीर हाट में शनिवार 28 दिसंबर 2013 को चार दिवसीय पुस्तक मेले का उद्‍घाटन संपन्न हुआ। पुस्तक मेले के उद्‍घाटन के बाद प्रख्यात कथाकार ममता कालिया ने अपने संबोधन में कहा ''आज के युग में भले ही विज्ञान और प्रौद्योगिकी के माध्यम से हम डिजिटल दुनिया में पहुँच गए हैं परंतु पुस्तकों का महत्व आज भी कायम है। पुस्तकों का असर गहरा और लंबे समय तक रहता है। परिवर्तन के लिए पुस्तकें ही कारण बनती हैं।''

इस अवसर पर कुलपति विभूति नारायण राय, आलोचक विजय मोहन सिंह, कथाकार से. रा. यात्री, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली के निदेशक रवीन्द्र कालिया, कवि विनोद कुमार शुक्ल, कुलसचिव डॉ. कैलाश खामरे, वित्त अधिकारी संजय गवई, प्रमुखता से उपस्थित थे। इस मेले में देशभर के 30 से अधिक प्रकाशकों ने अपने स्टॉल लगाए हैं। उद्‍घाटन के दिन से ही ग्रंथ प्रेमियों का उत्साह देखने को मिला। यह मेला 31 दिसंबर तक चला।

हिंदीप्रेमी ब्लॉगस्पॉट से साभार

http://hindipremi.blogspot.com/20131201archive.html

संपादकीय

साहित्यिक अभिव्यक्ति भाषा की जड़ों की गहराई का मापदण्ड होती है। कोई जनमानस किसी भाषा में अपनी भूमि, अपने लोगों, अपनी चिंताओं, अपनी स्थानीय वास्तविकताओं की कितनी अभिव्यक्ति कर पाता है यह उस जनमानस में उस भाषा की पैठ का मापक हो सकता है। दूसरी ओर यह बात कई बार दोहरा चुके हैं कि विश्व भाषा होने के लिए आवश्यक है कि हिंदी में वक्ताओं, पाठकों, प्रयोक्ताओं, लेखकों और अभिव्यक्ति के विषयों, मुद्दों, भावों सभी दृष्टियों से वैश्विक जनमानस का योगदान हो।

विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा पिछले कुछ वर्षों से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी कविता, कहानी, निबन्ध प्रतियोगिताओं का आयोजन हिंदी के वैश्विक प्रसार के इन दोनों मापदण्डों को सम्मिलित करते हुए महत्वपूर्ण सूचकांकों की प्राप्ति का बहाना रहा है। 2013 में आयोजित कविता प्रतियोगिता में हिंदी के वैश्विक प्रयोग को थाहने के लिए ही सचिवालय ने प्रतियोगिता को पाँच श्रेणियों में विभाजित किया था। प्रतियोगिता के लिए किसी विषय का निर्धारण न करना भी उसी उद्देश्य से था। भारत से प्राप्त होने वाली प्रविष्टियों को अलग रखने के पीछे भी यही कारण था कि प्रथम भाषा/मातृ, द्वितीय, अन्य अथवा विदेशी भाषा के रूप में प्रयोग करने वालों को एक ही तुला में रखना न्यायसंगत नहीं होता। (यहाँ यह स्विकारोक्ति भी महत्वपूर्ण है कि भारत के भी सभी हिंदी प्रयोक्ताओं को एक तुला में रखना न्यायसंगत नहीं है और इस समस्या का उपचार भी भावी आयोजनों में करने का प्रयास होगा।)

इस बार की रचनाएँ अनेक सुखद संकेतों के साथ आईं। भले ही भारतेत्तर क्षेत्रों से भी प्राप्त प्रविष्टियों के रचनाकारों में प्रवासी भारतीयों की बहुलता रही, फ़िर भी उन प्रवासियों द्वारा लिखी रचनाओं में भी पार्याप्त मात्रा में हिंदी ऐसी भावनाओं की अभिव्यक्ति का साधन बन पाई जो भारत से नहीं बल्कि प्रवासियों की नई ज़मीन से संबंधित हैं। प्रवासी के मन के साथ उसकी भाषा भी अपनी नई भूमि से अपनी शक्ति पाने लगी हैं। इधर जो लेखनियाँ उन्हीं ज़मीनों पर जन्मी, पली, बढ़ी हैं उनकी हिंदी ने ऐसी भावनाओं की अभिव्यक्ति की जो पूर्णत: उस ज़मीन की गन्ध को आत्मसात किए हुए हैं।

कुछ पंक्तियाँ उदाहरण की जो इस संपादकीय में आगे लिखे जाने वाले हज़ार शब्दों से अधिक अर्थवान होंगी। पहली एक ऐसी कविता से जो न केवल अफ़्रीका में जन्मी, पली एक महिला ने लिखी है बल्कि जिसका विषय भी पूर्णत: हिंदी की उस नई ज़मीन से जुड़ा है। यह कविता अफ़्रीका में लुप्त हो रहे पशु - गेण्डा के प्रति एक अफ़्रीकी महिला की चिंता अभिव्यक्त करती है:

लुप्त हो रहा हमारी बगिया का गौरव

बच्चों की विरासत छीन रहा है मानव ...

... कहीं गेंडा भी न बन जाए हमारी दास्तानों का प्रलम्ब

डोडो-डायनोसोरों की भांति एक काल्पनिक प्रतिबिम्ब।

दूसरा उदाहरण प्रतियोगिता से इत्तर... एक ऐसी कविता जो एक दक्षिणअ अफ़्रीकी राष्ट्र के नागरिक ने अपने राष्ट्रनेता के स्वर्गवास पर अपनी भाषा-हिंदी में लिखी है –

दक्षिण अफ़्रीका में जन्म लेकर

सारी दुनिया को प्रेरित किया, कड़वाहट छोड़ कर, प्यार बढ़ाया

सब को गले लगाकर, दुश्मनी से मुँह मोड़ा।

अतुल्य, अनमोल, यह दक्षिण अफ़्रीका का हीरा,

जनम लिया था, हमें बचाया।

ये मापक बता रहे हैं कि विश्व भाषा हिंदी में विश्वमानस की भावनाओं की अभिव्यक्ति की शक्ति है। लेकिन संकेत इस ओर भी है कि अभी आगे और बहुत काम है ...

मॉरीशस के हिंदी प्रेमियों के मन में भानुमती नागदान जी के जाने की टीस अभी भी है। विनम्र श्रद्धांजलि। उनका जाना एक गंभीर आशंका पर से पर्दा हटा गया कि शायद जैसे-जैसे पीढ़ियाँ परिवर्तित होती जाएँगी वैसे-वैसे भारतेत्तर हिंदी में साहित्यिक अभिव्यक्ति का स्रोत सूखता जाएगा। यह कोई रहस्य नहीं है कि इस प्रकार का लेखन नई पीढ़ि की लेखनी से भी आना कितना महत्वपूर्ण है और उनकी लेखनी से इस अभिव्यक्ति को प्रस्फुटित कर पाने के लिए व्यक्तिगत और संस्थागत स्तर पर कितने परिश्रम की अनिवार्यता है। इसलिए... अभी आगे और बहुत काम है...

गंगाधरसिंह सुखलाल 'गुलशन'
कार्यवाहक महासचिव

अंतरराष्ट्रीय हिंदी कविता प्रतियोगिता 2013

परिणाम

विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा विश्व हिंदी दिवस 2014 के उपलक्ष्य में एक अंतरराष्ट्रीय हिंदी कविता प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। परिणामों की घोषणा 10 जनवरी 2014 को विश्व हिंदी दिवस समारोह के अंतर्गत की गई। पाँच भौगोलिक क्षेत्रों के आधार पर प्रतियोगिता की पाँच श्रेणियाँ नियत की गई थीं। प्रस्तुत हैं 5 भौगोलिक क्षेत्रों के परिणाम:

भौगोलिक क्षेत्र 1: अफ़्रीका व मध्य पूर्व		
प्रथम पुरस्कार (300 डॉलर)	श्री फ़ारुख रुजुल	मॉरीशस
द्वितीय पुरस्कार (200 डॉलर)	श्रीमती बेद्वंती शंभू	मॉरीशस
तृतीय पुरस्कार (100 डॉलर)	श्री मोहनलाल बृजमोहन	मॉरीशस

भौगोलिक क्षेत्र 2: अमेरिका		
प्रथम पुरस्कार (300 डॉलर)	श्रीमती बिंदेश्वरी अग्रवाल	न्यू यॉर्क
द्वितीय पुरस्कार (75 डॉलर)	श्री अनिल पुरोहित	कनाडा
द्वितीय पुरस्कार (75 डॉलर)	श्री परिपूर्ण सिंह	कनाडा
द्वितीय पुरस्कार (75 डॉलर)	श्रीमती नीलू गुप्ता	कनाडा
द्वितीय पुरस्कार (75 डॉलर)	श्री कृष्णा वर्मा	कनाडा

भौगोलिक क्षेत्र 3: एशिया व ऑसट्रेलिया (भारत के अतिरिक्त)		
प्रथम पुरस्कार (300 डॉलर)	सुश्री प्रेरणा मित्तल	सिंगापुर
द्वितीय पुरस्कार (200 डॉलर)	डॉ. कौशल किशोर श्रीवास्तव	ऑस्ट्रेलिया
तृतीय पुरस्कार (50 डॉलर)	सुश्री रिद्मा निषादिनी	श्री लंका
तृतीय पुरस्कार (50 डॉलर)	डॉ. भावना कुँवर	ऑस्ट्रेलिया

भौगोलिक क्षेत्र 4: यूरोप		
प्रथम पुरस्कार (300 डॉलर)	डॉ. कविता वाचक्नवी	यू.के.
द्वितीय पुरस्कार (200 डॉलर)	श्री गौतम लियु	जर्मनी

भौगोलिक क्षेत्र 5: भारत		
प्रथम पुरस्कार (50 डॉलर)	डॉ. संगीता सक्सेना	जयपुर
प्रथम पुरस्कार (50 डॉलर)	प्रो. चंद्रकांत सिंह	हिमाचल प्रदेश
प्रथम पुरस्कार (50 डॉलर)	श्री राधे श्याम भारतीय	जयपुर
प्रथम पुरस्कार (50 डॉलर)	श्री सुनील जाधव	महाराष्ट्र
प्रथम पुरस्कार (50 डॉलर)	श्रीमती वंदना शर्मा	उत्तर प्रदेश
प्रथम पुरस्कार (50 डॉलर)	डॉ. साएमा बनो	हिमाचल प्रदेश
प्रथम पुरस्कार (50 डॉलर)	श्रीमती रश्मि प्रभा	पुणे
प्रथम पुरस्कार (50 डॉलर)	श्रीमती पूनम माटिया	दिल्ली
प्रथम पुरस्कार (50 डॉलर)	श्री विनोद पाण्डेय	गाज़ियाबाद
प्रथम पुरस्कार (50 डॉलर)	श्री सुधीर कुमार सोनी	छत्तीसगढ़
प्रथम पुरस्कार (50 डॉलर)	श्री रमेश यादव	मुम्बई
प्रथम पुरस्कार (50 डॉलर)	श्री आशीष कुमार कंधवे	दिल्ली